वर्ष 48 अंक 3
मार्च 2021

हँसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 48 • अंक 3 • मार्च 2021 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक

सुलेख साथी

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
16. समाचार
44. पढ़ो और हँसो
48. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. कभी न भूलो?

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

9. लंगड़ा सिपाही
: ललित मोहन

18. कबूतर उड़ गए
: कुसुम अग्रवाल

25. प्रकृति का नियम
: गोविन्द भारद्वाज

29. कालयवन का वध
: परशुराम संबल

39. पीचू की होली
: डॉ. देशबन्धु

46. दृढ़ इच्छा शक्ति की विजय
: हरमन अरोड़ा

विशेष/लेख

8. शहद के हैं बेहद लाभ
: विभा वर्मा

21. विष कंटक रे
: परशुराम शुक्ल

24. पहेलियां
: राधा नाचीज़

28. परीक्षा के दौरान ...
: अभिसार जैन

32. पृथ्वी का निरंतर बढ़ता ...
: जसविंदर शर्मा

42. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

43. घटता-बढ़ता चंद्रमा
: ईलू रानी

48. करने योग्य चार बातें
: ऊषा सभरवाल

कविताएं

7. जीवन में हो स्थिरता
: सुमेश निषाद

7. काँटों से क्या घबराना
: राजेन्द्र निशेश

11. प्रेम सद्भाव की प्रतीक ...
: किशोर कुमार 'स्वर्ण'

11. होली
: अर्चना शर्मा

17. जंगल की होली
: राजेश चौधरी

23. मंजिल मिल ही जाती है
: सुकीर्ति भटनागर

23. जीवन में कुछ काम करो
: महेन्द्र सिंह शेखावत

31. सुन्दर रंग-रंगीली होली
: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

31. कलियां
: गोविन्द भारद्वाज

41. तुम सोने से खरे हो बच्चो
: मदन 'शेखपुरी'

41. अच्छे बच्चे, मन के सच्चे
: ऊषा सरीन

सभी मनाएं होली

हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो स्वस्थ जीवन व्यतीत न करना चाहता हो और स्वस्थ रहने के लिए लगभग हर व्यक्ति प्रयत्नशील भी रहता है। कोई शारीरिक व्यायाम करता है। कोई लम्बी सैर करता है या कोई जिम में जाकर कसरत करता है। यह सभी शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक भी होते हैं। साथ ही साथ कुछ लोग खाने-पीने पर भी ध्यान देते हैं। समय पर खाते हैं। पौष्टिक भोजन करते हैं। विटामिन की गोलियों इत्यादि से भी खनिज तत्वों की पूर्ति करते हैं।

जब कभी भी कोई बीमारी या महामारी अपना विकराल रूप दिखाती है तो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नये-नये नियम, दिशा-निर्देश बनाए जाते हैं। कई तरह के परहेज भी बताए जाते हैं। जो परहेज करता है वह काफी हद तक बीमारी से बचा रहता है परन्तु वह भी, कभी-कभी जो परहेज नहीं करते, उनके सम्पर्क के आने पर उसी बीमारी के शिकार हो जाते हैं। वे दूसरे की गलती का भुगतान कर रहे होते हैं। इससे मन में दूसरों के प्रति नाराजगी का भाव भी उत्पन्न हो जाता है।

साथियों! आज सोचने और विचारने का समय भी है कि हम अपना ध्यान तो अवश्य रखें परन्तु क्या दूसरों का ख्याल रखना भी हमारा अपना ख्याल रखना नहीं है। जिनको भी हम दूसरा समझते हैं उनके लिए हम भी तो दूसरे ही होते हैं। इस बात को हमें समझना होगा। यह बात हम सबको अच्छी तरह से आत्मसात करनी होगी तभी हम मिल-जुलकर एक-दूसरे के पथ-प्रदर्शक बन सकते हैं।

कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन्हें हम जाने-अन्जाने में अपने खान-पान में, अपने व्यवहार में सम्मिलित कर लेते हैं लेकिन उनका हमें आभास तक नहीं होता। जैसे हम सारा समय या दिन जिनके साथ व्यतीत करते हैं या जिनके साथ हम काम करते हैं, उनका स्वभाव, उनकी बातें भी हमें प्रभावित कर जाती हैं। हम क्या सुनते हैं, क्या देखते हैं और हम क्या-क्या पढ़ते हैं? वह भी हमारे व्यवहार में समय-समय पर झलकता रहता है। यही व्यवहार हमारे मानसिक एवं सन्तुलित जीवन को प्रदूषित कर जाता है।

पौष्टिक, विटामिन युक्त भोजन से हमारा शरीर सशक्त बनता है परन्तु हम जो देखते हैं, सुनते हैं, पढ़ते हैं और जिनके साथ हम रहते हैं वह भी हमारा भोजन ही है। यह भी हमारे शरीर को मन के द्वारा प्रभावित करता है। अगर हम स्वस्थ रहना चाहते हैं तो हमें इन सबका विवेकपूर्ण विवेचन करना होगा। जो हमारे लिए बेहतर है, उसे अपनाना होगा और बाकी सब कुछ छोड़ देना होगा।

कई बार मिलना-जुलना बहुत खुशी देता है। जैसे होली के त्योहार में सभी मिलते हैं। रंग लगाते हैं और खुशी में झूमते हैं परन्तु कभी-कभी दूर रहकर मिलने का तरीका भी, दूसरों के लिए सार्थक एवं लाभदायक हो सकता है और हमारे लिए भी। अगर हमारे दिल की धड़कनें दूसरे को प्यार भेजती हैं तो वह दूसरे के दिल को छू जाता है और सम्पर्क का आनन्द भी ऐसा आता है जो सामने मिलकर भी नहीं आ पाता।

आओ मिलजुल सभी मनाएं होली।
रंग प्रेम का खेलें बोले मीठी बोली।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 229

विच भरमां दे पई ए दुनियां ज़ोर पढ़न ते ला रही ए।
जो विच लिख्या कन्न नहीं धरदी ऐवें मगज़ खपा रही ए।
सच्चियां लिखतां लाहनत पावन पढ़ना कम्म नहीं आउणा ए।
बिना गुरु दे ज्ञान नहीं हुन्दा बिरथा जनम गवौणा ए।
मुरशद बाझों दुनियां उत्ते कदे उद्धार नहीं हो सकदा।
ज्ञान कदे वी मुरशद बाझों कहे अवतार नहीं हो सकदा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी ज्ञान की विशेषता के बारे में बता रहे हैं कि लोगों को सत्य (परमात्मा) का पता नहीं है। दुनिया के लोग भ्रमों में फंसे हुए हैं और अपना सारा ज़ोर पढ़ने-पढ़ाने पर लगा रहे हैं। ज्ञान होगा तभी भ्रम मिटेंगे। भ्रम की स्थिति इन्सान के जीवन को असहज बना देती है। भ्रम के कारण व्यक्ति वास्तविक और काल्पनिक का अन्तर नहीं समझ पाता। अंधेरे में पड़ी रस्सी भ्रम के कारण सांप नज़र आती है और अंधेरे में सांप भी रस्सी नज़र आता है। आज इन्सान भ्रमों में ही तल्लीन है और धर्म ग्रन्थों में जो कुछ लिखा हुआ है उस पर न तो ध्यान दे रहा है और न ही उसको कानों से ठीक से श्रवण कर रहा है। लोग व्यर्थ ही अपना दिमाग इधर-उधर लगाते रहते हैं। भ्रम के कारण इन्सान मन की काल्पनिक बातों को सच मानकर उन पर ही ज्यादा विश्वास करता है और प्राय: मुसीबतों में फंस जाता है।

धर्म-शास्त्रों में जो सच्चाई लिखी हुई है वो इन्सान को धिक्कार रही है कि केवल पढ़ने से काम नहीं बनने वाला बल्कि सद्गुरु के चरणों में बैठकर सच (प्रभु) को जानना भी आवश्यक है। जीवन का यह अति महत्वपूर्ण कार्य गुरु की कृपा के बिना होने वाला नहीं है। परमात्मा का ज्ञान होगा तभी संसार सागर से पार-उतारा संभव होगा अन्यथा यह बहुमूल्य मानव जन्म व्यर्थ ही चला जाएगा।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान इस स्थिति में तेरा संसार में मानव जन्म लेकर आना किसी काम नहीं आएगा। वे यहाँ सांसारिक ज्ञान की नहीं बल्कि परमज्ञान इस ब्रह्मज्ञान की बात कर रहे हैं। इसको प्राप्त करने के लिए ही यह अमूल्य जन्म मिला है। परमात्मा के बारे में सभी धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि यह प्रभु सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, इसको गुरु की कृपा से जाना जा सकता है। धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि ज्ञान की गहराई में उतरकर इनका अर्थ समझना है, इन्हें केवल पढ़ते ही नहीं रहना है।

बाबा अवतार सिंह जी और स्पष्ट कर रहे हैं कि मुरशद अर्थात् सत्य का मार्ग दिखाने वाले सद्गुरु की कृपा के बिना दुनिया में किसी का भी उद्धार न हुआ है और न ही हो सकता है। परमात्मा का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। इस ज्ञान को पाकर मानव जीवन सफल करना है।

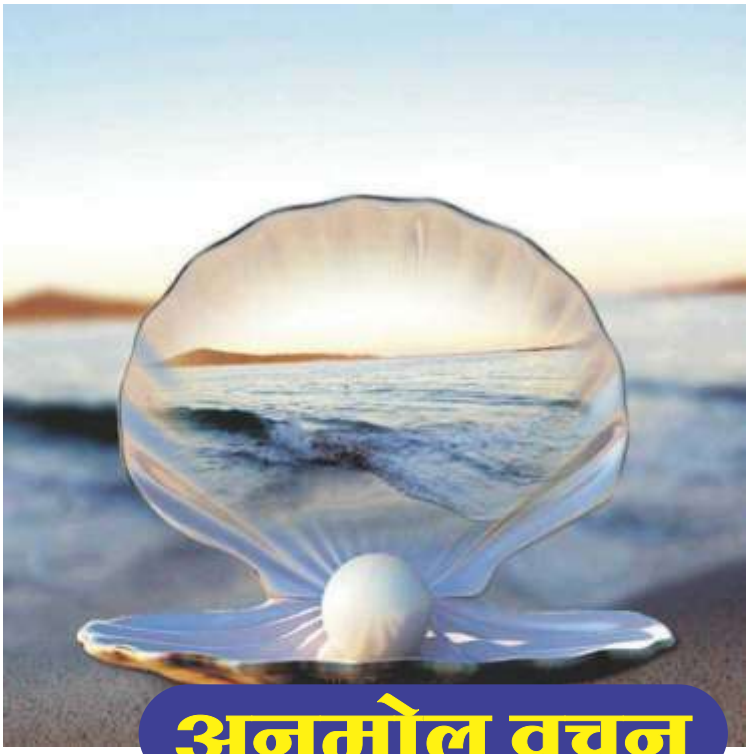

अनमोल वचन

- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है।
- निरंतर कार्य करने वाले को सफलता अवश्य मिलती है। – वेदव्यास
- मनुष्य जितना ज्ञान में घुल जाता है। वह कर्म के रंग में उतना ही रंग जाता है।
- सद्कर्म और अच्छे विचार ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाते हैं। – विनोबा भावे
- जीवन बनाना है तो समय नष्ट न करो। – फ्रेंकलिन
- चरित्र एक ऐसा हीरा है जो सभी पाषाणों को काट देता है। – कार्लाइल
- सच्चा मनुष्य वही है जो बुराई का बदला भलाई से दे। – महात्मा गाँधी
- दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हैं। – महात्मा बुद्ध
- कायर तभी धमकी देता है जब वह सुरक्षित होता है। – गेटे
- विद्यार्थी की सच्ची सुन्दरता उसके गुणों और योग्यताओं में है न कि बाहरी फैशन में। – प्रेमचन्द
- प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है। – स्वामी विवेकानन्द
- कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। – गीता उपदेश
- बुराई करने के अवसर तो दिन में कई बार आते है परन्तु भलाई करने के अवसर कभी-कभी ही आते हैं। – वाल्टेयर
- लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा उत्पन्न नहीं हो सकती। – अरस्तु
- मेहनत वह चाबी है जो किस्मत का दरवाजा खोल देती है। – चाणक्य
- यदि हम भले हैं तो सारा संसार हमारे लिए भला है। – समर्थ रामदास
- अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
- असम्भव एक शब्द है जो केवल मूर्खों के शब्दकोष में पाया जाता है। – नेपोलियन
- ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा दरवाजा दोबारा खटखटायेगा। – शैम्फोर्ट

संग्रहकर्त्ता : पृथ्वीराज (घोण्डा, दिल्ली)

कविता : सुमेश निषाद

जीवन में हो स्थिरता

मन में मजबूती दृढ़ता।
जीवन में हो स्थिरता।
काबू में रखना मन को,
त्यागो मन की चंचलता।

जड़ें पेड़ को थाम रहीं।
गहराई को नाप रहीं।
जल और ताकत देती जातीं,
फल-फूलों को पाल रहीं।

पाठ सदा हमको पढ़ना।
सुन्दर लेख हमें लिखना।
डांवाडोल नहीं होना,
पढ़-लिखकर आगे बढ़ना।

अच्छी बातें सीखें हम।
नहीं बुराई पालें हम।
शिक्षित हों गुणवान बनें,
कभी न हारें जीतें हम।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

काँटों से क्या घबराना

नन्हें-सपने, बड़े इरादे,
अब हैं ये सारे मुट्ठी में।

पाँवों को है चलते जाना,
मंजिल तो प्यारे मुट्ठी में।

चेतनता का पाठ पढ़ेंगे,
एहसास दुलारे मुट्ठी में।

इन्द्रधुनष-सा हमको सजना,
अब रंग हैं सारे मुट्ठी में।

यह गगन हमारी मंज़िल है,
सागर के धारे, मुट्ठी में।

काँटों से अब क्या घबराना,
जब गुलाब सारे मुट्ठी में।

जानकारी : विभा वर्मा

शहद के हैं बेहद लाभ

बच्चों, क्या तुम्हें पता है कि शहद औषधि का भी काम करता है। यह पाँच अमृत कहे जाने वाले पदार्थों में से एक है। जिसे तुम बहुत चाव से ग्रहण करते हो। यह प्रकृति के खजाने में से मिलता है। इसमें शर्करा के अतिरिक्त लोहा, तांबा, पोटेशियम, गन्धक, चूना, मैगनीज एवं फास्फोरस आदि पाये जाते हैं। मधु शब्द कल्याण का पर्याय है क्योंकि यह धनी-निर्धन, बाल-वृद्ध के साधारण से साधारण एवं गम्भीर रोगों को सरल घरेलू उपचार में काम आता है। आओ इसके कुछ गुणों से तुम्हें परिचित करायें।

- ★ कठिन परिश्रम के पूर्व एवं बाद में दो-दो चम्मच शहद पी लो तो तुम्हारी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। यह ग्लूकोज का सीधा काम करता है।
- ★ प्रात:काल एक चम्मच शहद गुनगुने पानी में नीबू निचोड़कर लेने से मोटापा कम होता है।
- ★ शहद के सेवन से बुद्धि भी तीव्र होती है।
- ★ रात को सोते समय भी गुनगुने पानी में शहद मिलाकर चाय की तरह पीने से नींद अच्छी आती है।
- ★ प्रतिदिन सोते समय आँख में काजल की भांति शहद लगाने से नेत्र-ज्योति में वृद्धि होती है।
- ★ शहद को पानी में मिलाकर गरारे करने से जुकाम, कफ के कारण टॉन्सिल बढ़ जाने पर लाभ मिलता है।
- ★ दो तोला (लगभग 20 ग्राम) शहद एवं एक गिलास पानी दिनभर में तीन बार लेने से गर्मी शान्त होती है।
- ★ शहद से हृदय को बल भी मिलता है।
- ★ आग से जले भाग में इसे लगाने से घाव शीघ्रता से भरता है।
- ★ वर्षा ऋतु में शहद नित्य दो से चार चम्मच लेना चाहिए।

इसके प्रयोग के समय कुछ सावधानियां बरतनी भी आवश्यक हैं–

- गरम दूध या गरम पानी में शहद न मिलाएं, कुछ गुनगुना ठीक रहता है।
- मांस मछली के साथ भी इसका सेवन वर्जित है।
- शहद के साथ मूली, कटहल कभी सेवन नहीं करना चाहिए।
- गर्म प्रवृत्ति के लोगों को भी इसका सेवन ठीक नहीं है।
- शहद के साथ घी की समान मात्रा कभी नहीं रखनी चाहिए। अन्यथा यह विष का काम करता है। हमेशा मात्रा विषम ही होनी चाहिए।

बाल कहानी : ललित मोहन

लंगड़ा सिपाही

आदित्य की उम्र आठ वर्ष थी। वह चौथी कक्षा में पढ़ता था।

एक दिन आदित्य घर के पास खेल रहा था। वह अचानक फिसल गया। जिससे उसके पैर में चोट आ गई। वह जोर-जोर से रोने लगा।

''अरे, आदित्य क्या हो गया? क्यों रो रहे हो?'' आदित्य की दादी ने रोते हुए आदित्य से पूछा।

''दादी मैं फिसल गया। मेरे पैर में चोट आ गई है।'' आदित्य ने रोते हुए कहा।

दादी तेजी से आदित्य के पास आई। ''दिखाओ कहाँ आई है चोट?'' दादी ने कहा।

आदित्य ने अपना पैर दिखाया। ''दादी बहुत दर्द हो रहा है।'' वह बोला।

आदित्य का पैर हल्का-सा छिल गया था। कोई बड़ी या गंभीर चोट नहीं थी। ''बस इतनी सी चोट में आसमान सर पर उठा लिया। सोचो उस लगड़े सिपाही ने कैसे चोरों के छक्के छुड़ा दिये होंगे।'' दादी ने कहा।

''कौन लंगड़ा सिपाही? आप किस लंगड़े सिपाही की बात कर रही हैं दादी जी।'' आदित्य ने उत्सुकता से पूछा। वह अपना दर्द भूल चुका था।

''क्या तुमने लंगड़े सिपाही की बहादुरी की कहानी नहीं सुनी?'' दादी ने पूछते हुए कहा।

''नहीं दादी। प्लीज सुनाओ ना।'' आदित्य ने कहा।

''अभी नहीं शाम को सुनाऊँगी।'' दादी ने कहा।

''ठीक है दादी शाम को जरूर सुनूंगा।'' आदित्य ने कहा।

अब दादी घर के कामों में लग गई। आदित्य भी खेलने लग गया। शाम को खाना खाने के बाद आदित्य दादी के कमरे में आ गया।

''आपको दिन का प्रॉमिस याद है न दादी। लंगड़े सिपाही की कहानी सुनानी है आपने।'' आदित्य बोला।

''ठीक है, ठीक है। याद है मुझे।'' दादी ने कहा।

आदित्य ध्यान से सुनने लगा।

एक बार एक गाँव में चोर घुस आए थे। यही कोई चार-पांच चोर रहे होंगे। उन्होंने गाँव के कई घरों को लूट लिया था। वे एक ही रात में पाँच-छः घरों में घुस गए थे। गाँववाले संख्या में ज्यादा होने के बावजूद डर के मारे घरों से बाहर नहीं निकल पाए। जिससे चोरों के हौंसले बहुत बढ़ चुके थे। चोर गाँव से निकलने से पहले लंगड़े सिपाही के घर के अन्दर घुसने लगे। पहले से तैयार सिपाही ने

चोरों पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। उसके पास एक मोटा डंडा था। अचानक हुए हमले से चोर घबरा गए। उनमें से एक चोर के हाथ में बंदूक भी थी। जो डंडा लगने से नीचे फर्श में गिर गई। सिपाही ने बंदूक उठाई और हवा में फायर कर दी। जिससे सभी चोर डरकर भाग गए। तब तक गाँववाले भी वहाँ आ गए थे। सभी ने लंगड़े सिपाही की खूब तारीफ की।'' दादी ने कहानी सुनाते हुए कहा।

''दादी, सिपाही लंगड़ा कैसे हुआ। क्या उसने उस घटना के बाद गाँववालों से कुछ कहा?'' आदित्य ने पूछा।

''बेटा, सिपाही युद्ध के मैदान में गोली लगने से लंगड़ा हो गया था। वह बहुत बहादुर था। उसने गाँववालों से कहा– तुम सब इतने होकर भी थोड़े से चोरों का सामना नहीं कर पाए। कायर होना अच्छी बात नहीं। हमें अपने अन्दर साहस पैदा करना होगा। तभी हम चोरों का सामना कर पाएंगे। तब से उस गाँव के सभी लोग किसी भी मुसीबत का डटकर सामना करने लगे। फिर वहाँ कभी चोरी नहीं हुई।'' दादी ने बताया।

''मैं भी साहसी बनूंगा।'' आदित्य ने जोश में आकर कहा।

''तभी तो सुनाई तुम्हें ये कहानी ताकि तुम अगली बार थोड़ी-सी खरोंच लगने पर दहाड़े मारकर न रोने लगो।'' दादी ने हँसते हुए कहा।

''जरूर दादी अब से ऐसा कभी नहीं होगा।'' आदित्य ने कहा।

लंगड़े सिपाही की कहानी सुनकर आदित्य के अन्दर गजब का साहस पैदा हो गया था। अब उसे नींद भी आ रही थी। वह दादी काक 'गुड नाईट' बोलकर अपने कमरे में चला गया।

बाल कविता : किशोर कुमार 'स्वर्ण'

प्रेम सद्भाव की प्रतीक है होली

हर इन्सां को गले लगायें,
होली मिलकर चलो मनायें।
दिलों से वैर नफरत मिटाकर,
प्रेम की खुशबू को महकायें।।

मानव समाज बिखर गया है,
आओ मिल-जुल इसे सजायें।
न सतायें कभी किसी को,
रोते हुए इन्सां को हँसाये।।

जो चलते हैं सही मार्ग पर,
वे ही हर पल खुशियां पायें।
प्रेम सद्भाव की प्रतीक है होली,
'स्वर्ण' प्यार के रंग बरसायें।।

बाल कविता : अर्चना शर्मा

होली

होली आई रंग बिरंगी,
खुशियों का त्योहार ले।
झूमे-नाचें चंग बजाये,
ढोल नगाड़ा साथ ले।।

नीली-पीली और रंगीली,
पिचकारी भरी रंग रे।
वैर भाव को दूर करे ये,
होली का त्योहार रे।।

इक दूजे को गले लगा ले,
रंगों की बहार रे।
अमराई के आंगन महके,
सरसों फूली जात रे।।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
–अजय कालड़ा

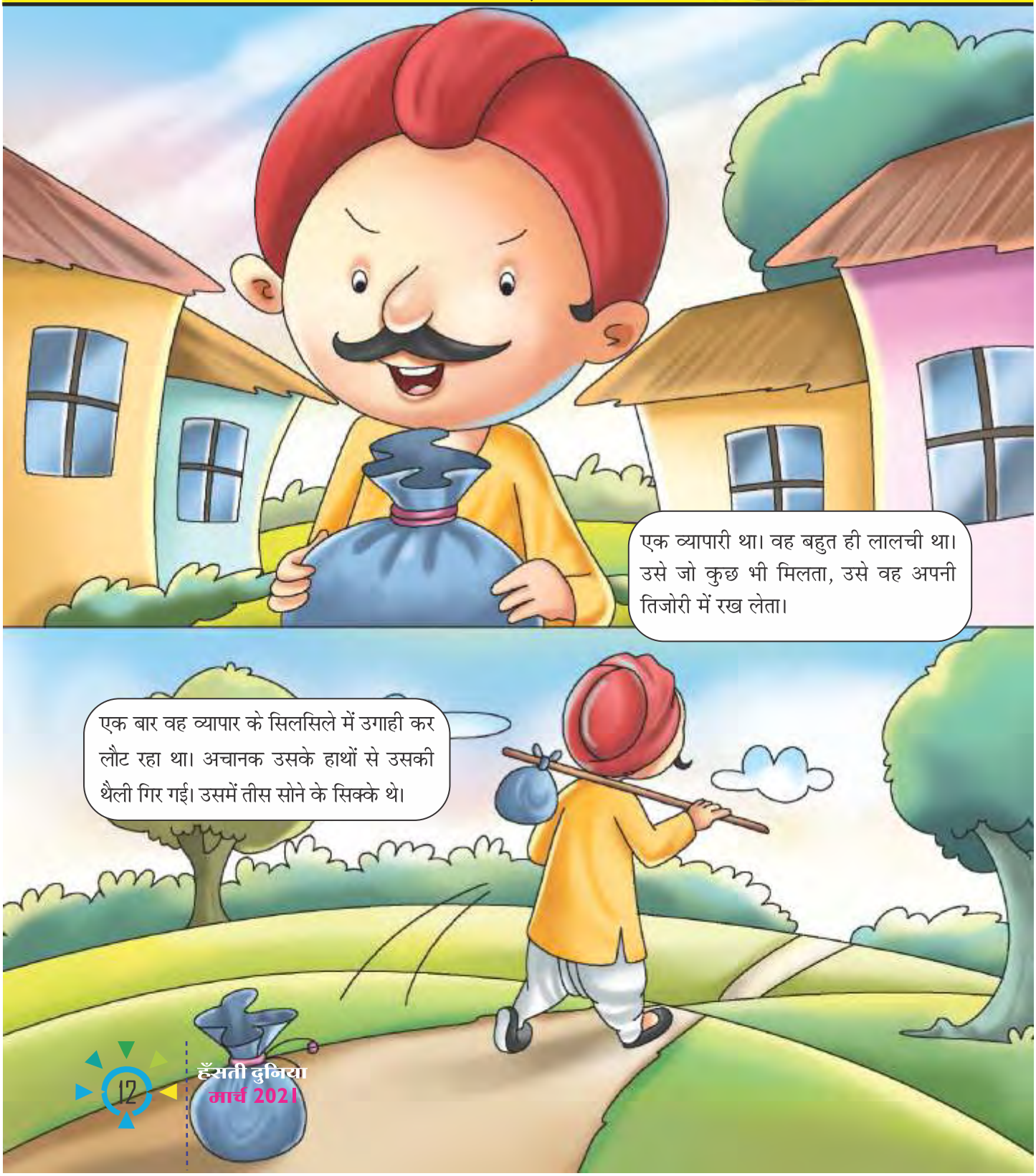

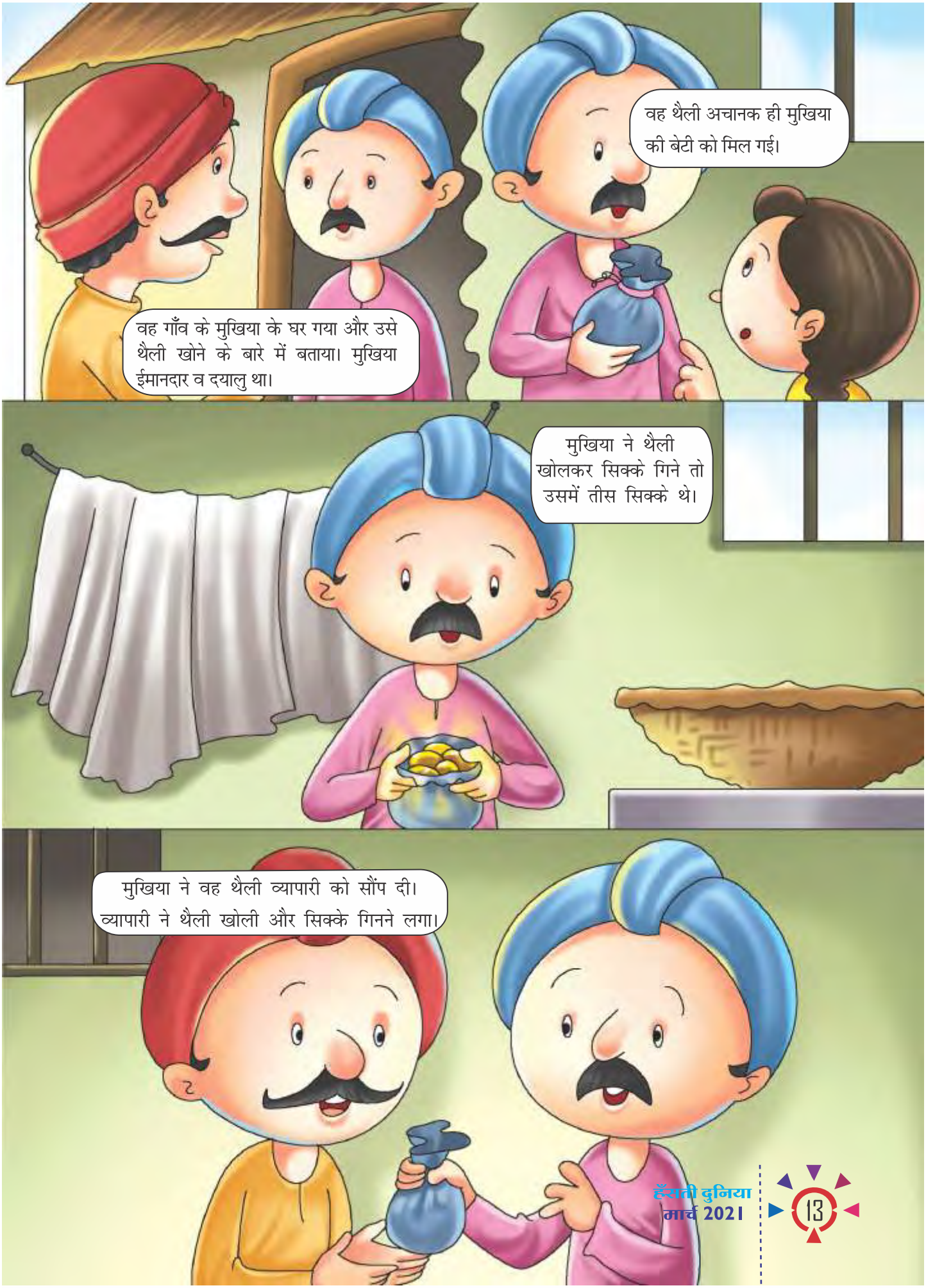
वह गाँव के मुखिया के घर गया और उसे थैली खोने के बारे में बताया। मुखिया ईमानदार व दयालु था।
वह थैली अचानक ही मुखिया की बेटी को मिल गई।
मुखिया ने थैली खोलकर सिक्के गिने तो उसमें तीस सिक्के थे।
मुखिया ने वह थैली व्यापारी को सौंप दी। व्यापारी ने थैली खोली और सिक्के गिनने लगा।

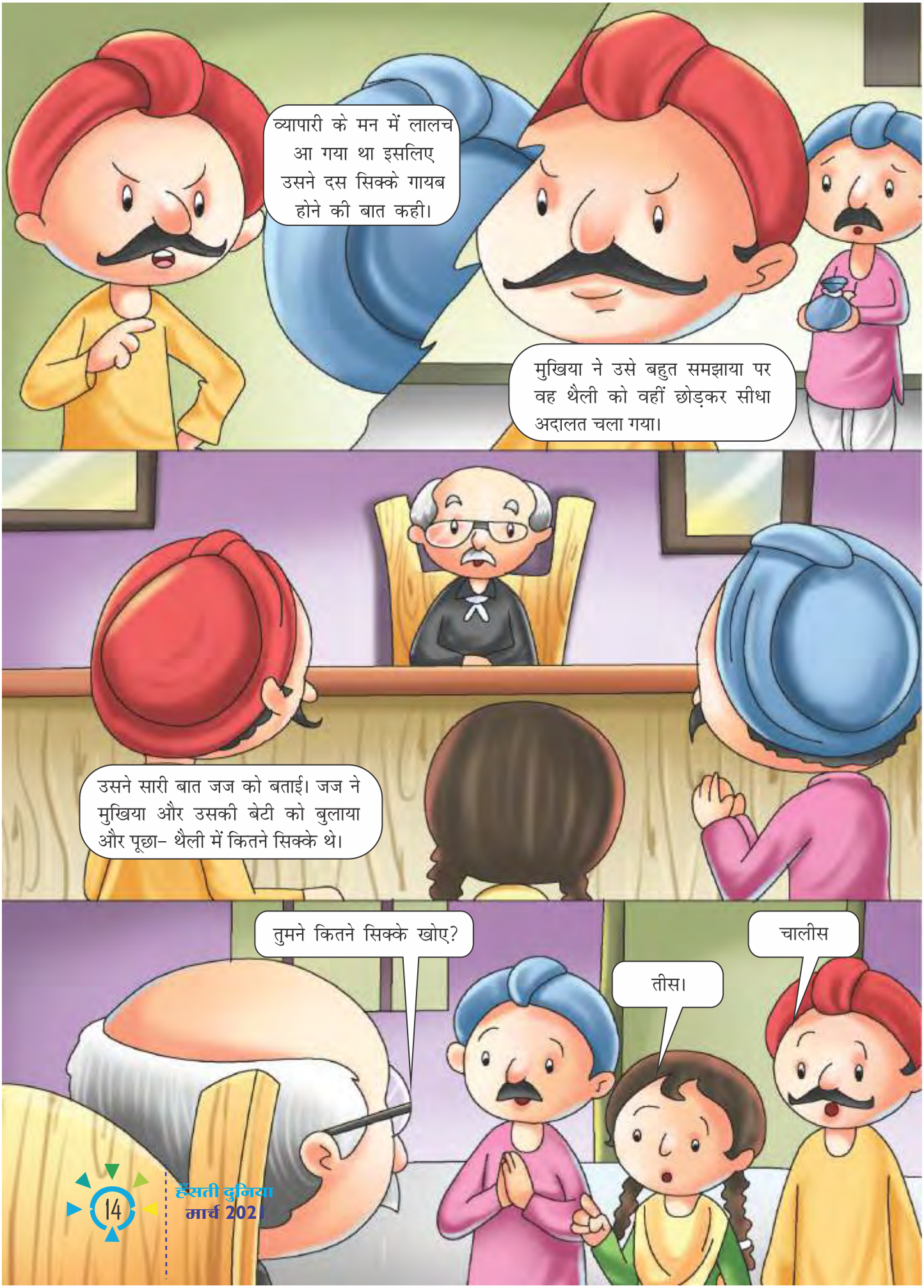
व्यापारी के मन में लालच आ गया था इसलिए उसने दस सिक्के गायब होने की बात कही।
मुखिया ने उसे बहुत समझाया पर वह थैली को वहीं छोड़कर सीधा अदालत चला गया।
उसने सारी बात जज को बताई। जज ने मुखिया और उसकी बेटी को बुलाया और पूछा– थैली में कितने सिक्के थे।
तुमने कितने सिक्के खोए?
तीस।
चालीस

तो इसका मतलब यह है कि यह थैली तुम्हारी नहीं है। ये थैली इसी लड़की के पास रहेगी जब तक इसका असली मालिक न मिल जाए।
और अगर कोई चालीस सिक्कों की थैली आएगी तो मैं तम्हें बुलवा लूँगा।
अब व्यापारी को अपने झूठ पर पछतावा होने लगा और वह चिल्ला उठा– नहीं, नहीं मेरे तो तीस सिक्के ही खोए थे।
पर जज ने उसकी एक न सुनी और अदालत से बाहर निकाल दिया।
इस तरह 'लालच का अंत बुरा ही होता है।'

उपलब्धि

यंग साइंटिस्ट और इनोवेटर :

गीतांजलि राव

भारतीय मूल की गीतांजलि राव ने अमेरिका में सिर्फ 12 साल की उम्र में उन्होंने पानी में लेड का पता लगाने वाला एक पोर्टेबल डिवाइस बनाया है जो सेंसर टेक्नोलॉजी पर काम करता है। यह डिवाइस मोबाइल की तरह दिखाई देता है। उसका नाम उन्होंने 'टेथिस' (Tethys) रखा। डिवाइस को पानी में सिर्फ कुछ सेकिण्ड तक डालने के बाद बता देता है कि पानी में लेड की मात्रा कितनी है। इसकी जानकारी यह डिवाइस स्मार्टफोन पर भेज देता है। गीताजंलि की इस डिवाइस पर अमेरिकी वैज्ञानिकों ने काम करना भी शुरू कर दिया है।

★ गीतांजलि ने 15 साल की उम्र में एपिऑन (Epione) नाम का एक और डिवाइस बनाया। यह डिवाइस नशीली चीजों की लत छुड़ाने में काम आता है।

★ साथ ही उन्होंने साइबर बुलिंग रोकने के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) पर आधारित काइंडली (Kindly) नाम का एक ऐप और क्रोम एक्सटेंशन बनाया है। इस ऐप की मदद से साइबर बुलिंग शुरू में ही आसानी से पकड़ में आ जाती है। दरअसल, गीतांजलि ने बुलिंग वर्ड्स को लेकर कोडिंग तैयारी की है। जो भी शख्स बुलिंग करता है तो उसके शब्द टाइप करते ही पकड़ में आ जाते हैं कि बुलिंग हो रही है। यह ऐप लिखते ही सावधान कर देता है कि आप जो शब्द टाइप कर रहे हैं, वह बुलिंग है।

गीतांजलि को अब तक निम्न अवार्ड मिल चुके हैं। –

1. 2019 में फोर्ब्स की 30 अंडर-30 लिस्ट में जगह मिली थी।
2. ईपीए प्रेजिडेंशल अवॉर्ड
3. जॉर्ज स्टिफेनसन इनोवेशन अवॉर्ड 2020
4. कुमॉन 2019 स्टूडेंट इंस्पाइरेशल अवॉर्ड
5. टीसीएस इग्नाइट इनोवेशन टॉप हेल्थ पिलर अवॉर्ड

इसके अलावा वह कई किताबें भी लिख चुकी हैं।

5 हजार बच्चों में से चुनी गई।

टाइम मैगजीन ने पहली बार 'किड ऑफ द ईयर' के लिए बच्चों से नॉमिनेशन मांगे थे। साइंस में इनोवेटिव रिसर्च करने वाले स्टूडेंट को यह अवॉर्ड दिया जाना था। 8 से 16 साल के करीब 5 हजार अमेरिकी बच्चों ने अपने आवेदन भेजे। गीतांजलि ने इन सभी बच्चों को पीछे छोड़ अवॉर्ड अपने नाम किया।

कविता : राजेश चौधरी

जंगल की होली

जंगल में मचा हुआ था,
चारों तरफ हुड़दंग।
सभी जानवर आ रहे थे,
लेकर पिचकारी-रंग।।
सबसे पहले शेर पर,
बंदर ने रंग बरसाए।
फिर ब्लैकी भालू ने,
अबीर गुलाल लगाए।।
हाथी दादा बालटी भर-भर,
सब पर डाल रहे थे रंग।
हिरन, गैंडा और जेबरा,
पी रहे थे दूध में भंग।।
जंगल के जानवरों ने,
मिलकर होली मनाई।
एक-दूजे को ही सबने,
खिलाई खूब मिठाई।।

कहानी : कुसुम अग्रवाल

कबूतर उड़ गए

राजा कुशाल सिंह बड़ा ही नेक व पराक्रमी राजा था। उसके पास अपार धन-दौलत थी। वह प्रजा की भलाई के कामों में लगा रहता था। प्रजा भी राजा से खुश थी। पड़ोसी राजा कुशाल सिंह की खुशहाली और लोकप्रियता से जलते थे परन्तु कुशाल सिंह के राज्य की शक्ति के आगे उनका कोई जोर नहीं चलता था।

एक बार राजा ने सोचा कि क्यों न राज्य में कुछ मंदिर बनवाए जाएं। उसने अपने मंत्री से कहा– ''हमारे राज्य में मंदिर बहुत कम हैं। नगरवासियों को पूजा-अर्चना में असुविधा होगी। मेरे विचार से राज्य में कुछ अच्छे मंदिरों का निर्माण होना चाहिए। उन मंदिरों में सोने की मूर्तियां स्थापित हों। मंदिर तथा उनकी मूर्तियां कला के उत्कृष्ट नमूने होने चाहिए।'' मंत्री बोला– ''ठीक है महाराज, जैसी आपकी आज्ञा।''

अगले दिन से ही मंदिरों का निर्माण कार्य शुरू हो गया। विभिन्न राज्यों के कारीगरों को काम पर लगाया गया। राजा कभी-कभी स्वयं जाकर राजधानी के मंदिरों के काम का निरीक्षण करता था। कारीगरों की पूरी निगरानी भी रखी जाती थी। शीघ्र ही मंदिर बनकर तैयार हो गए। मंदिर बहुत ही दर्शनीय बने थे। भगवान की मूर्तियों की शोभा तो देखते ही बनती थी। राजा कारीगरों की कला देखकर प्रसन्न हो गया। शुभ मुहूर्त में मंदिर दर्शनार्थियों के लिए खोल दिए गए थे। इन मंदिरों में पुजारी रखे गए। देखभाल के लिए सेवक भी रखे गए।

एक दिन राजा सुबह सोकर उठा तो उसे महल के बाहर कुछ शोर सुनाई दिया। वह बाहर आया, आकर देखा महल के बाहर काफी लोग इकट्ठे थे। राजा ने पूछा– ''क्या बात है? आप सब इतने परेशान क्यों हैं?''

भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा और बोला– ''महाराज, गजब हो गया। सभी मंदिरों में से मूर्तियां गायब हो गईं।'' यह बात सुनकर राजा भी आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा– कैसे हुआ? क्या पुजारी ने रात को मंदिर में ताला नहीं लगाया था?

वह आदमी बोला– ''नहीं महाराज, पुजारी ने ताला लगाया था। सब दरवाजे भी भली-भांति बंद किए थे, फिर भी चोरी हो गई।''

राजा यह सुनकर और भी हैरानी से बोला– ''अच्छा, यह तो बड़ी ताज्जुब की बात है।'' फिर उसने सिपाहियों ने कहा– ''तुम जाकर पता लगाओ, चोर किधर से आए?''

सिपाही गए। कुछ देर बाद लौट आए और बोले– ''महाराज हमने अच्छी तरह से निरीक्षण किया है। दीवारों में सेंध का कोई निशान नहीं है। सभी खिड़कियां तथा दरवाजे सही सलामत हैं। न ही फर्श कहीं से टूटा-फूटा हुआ है। समझ में नहीं आता, चोर अंदर कैसे आया?''

सारी बात सुनकर राजा ने कहा– ''हमारे चलने की तैयारी करो। हम स्वयं देखेंगे कि माजरा क्या है?'' जब राजा आखिरी मंदिर देख रहा था तो उसने मंदिर के सभी दरवाजे तथा खिड़कियां अंदर से बंद कर लिए। फिर वह सभी दीवारें देखने लगा। अचानक उसने देखा मंदिर के घंटे पर दो कबूतर बैठे हैं। राजा बड़ा हैरान हुआ। सभी दरवाजे-खिड़कियां बंद हैं। मंदिर में कहीं पर भी इतना बड़ा सुराख नहीं है कि कबूतर अंदर आ जाएं फिर ये कबूतर कहाँ से आए? राजा ने अपने सिपाहियों से कहा– ''कबूतरों को डराकर उड़ाओ।''

काफी देर तक तो कबूतर मंदिर में इधर-उधर चक्कर काटते रहे। फिर मंदिर की छत की ओर उड़ चले। वहाँ एक-दो चक्कर काटने के बाद कबूतर गायब हो गए। राजा सोचने लगा– ''मंदिर की छत पक्की बनी हुई है इसमें कोई दरार या छेद भी नज़र नहीं आता, फिर कबूतर कहाँ गायब हो गए?'' राजा ने सिपाहियों से कहा– ''मंदिर की छत पर चढ़ो। पता लगाओ इसमें कहीं कोई सुराख तो नहीं है।''

सिपाही मंदिर की छत पर चढ़े। उन्होंने देखा मंदिर की छत इस प्रकार बनी है कि बाहर से देखने पर तो लगता है कि कोई सुराख नहीं है परन्तु उसमें एक बड़ा सुराख बनाया गया है जिससे एक आदमी उसमें से मंदिर में प्रवेश कर सकता है। कबूतर उसी से बाहर निकले होंगे।

नीचे उतरकर उन्होंने राजा को यह बात बताई। सुनकर राजा को कारीगरों पर अत्यंत क्रोध आया। साथ ही उनकी कला पर हैरानी भी हुई। उसने अपने सिपाहियों से कहा– ''जिन कारीगरों ने यह मंदिर बनाया है, उन्हें पकड़कर ले आओ।''

सिपाही उन कारीगरों को पकड़ लाए। राजा ने पूछा– ''बताओ, किसके कहने पर तुमने यह काम किया?'' कारीगर डर गए। उनकी चोरी पकड़ी गई थी। उन्होंने कहा– ''महाराज, हम पड़ोसी राज्य में रहते हैं। अपने राजा के कहने पर ही हमने यह काम किया।''

राजा ने पूछा– ''चुराई हुई मूर्तियां कहाँ हैं? कारीगरों ने घबराकर जहाँ मूर्तियां छिपा रखी थीं। वह स्थान बता दिया।''

राजा ने मूर्तियां फिर से स्थापित करवा दीं। कारीगरों को राजा ने छोड़ दिया क्योंकि इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी। पड़ोसी राजा को अपने दूत के हाथ राजा ने यह संदेश भिजवाया– ''आपने यह बहुत ही घटिया काम करवाया है। हमारी मित्रता पुरखों से चली आ रही है। सोने के लालच में आपने जो काम किया है उसमें मुझे पता चल गया है कि आप कितने सच्चे मित्र हैं। साथ ही मैं सचेत भी हो गया हूँ। ''लालची के साथ मित्रता करना, अपने को धोखे में रखना है।''

पड़ोसी राजा ने यह संदेश पढ़ा तो शर्म से उसकी गर्दन झुक गई। एक अच्छा मित्र देश खो दिया। सोना भी न मिला और एक शक्तिशाली राजा से दुश्मनी हुई सो अलग।

जानकारीपूर्ण लेख : परशुराम शुक्ल

विष कंटक रे
(Sting Ray)

विष कंटक रे एक समुद्री मछली है। इसके शरीर पर एक विषैला कांटा होता है। इसलिए इसे यह नाम दिया गया है। विष कंटक रे को अंग्रेजी में 'स्टिंग रे' कहते हैं। विष कंटक रे विश्व के अधिकांश ऊष्णकटिबंधीय, उपऊष्णकटिबंधीय और समसीतोष्ण सागरों तथा महासागरों में पाई जाती है। गर्मियों के मौसम में इसे उत्तर में स्कैन्डीनेविया तक देखा जा सकता है। विष कंटक रे की लगभग 100 जातियां हैं। इसकी अधिकांश जातियां उथले पानी में रहती हैं किन्तु कुछ जातियां सागर में गहराई तक भी पहुँच जाती हैं। कभी-कभी विष कंटक रे 120 मीटर की गहराई पर भी पहुँच जाती है। इसकी कुछ जातियां ऐसी भी हैं जो मुहानों में घुसकर नदियों में काफी ऊपर तक चली जाती हैं। विष कंटक रे अपने जीवन का अधिकांश भाग आराम करते हुए व्यतीत करती है। यह सागर तल में तैरती रहती है अथवा शिकार की खोज करती रहती है। यह एक कुशल तैराक मछली है और अपनी छाती के मीनपंख को लहराकर बड़ी शान से तैरती है। विष कंटक रे को यदि परेशान किया जाये तो यह क्रोधित होकर अपनी पूँछ हिलाती है। इसकी कुछ जातियां अगल-बगल पूँछ हिलाती हैं एवं कुछ जातियां पूँछ को शरीर के ऊपर ले आती हैं। इससे इसका तलवार जैसा विषैला कांटा सक्रिय हो उठता है। विष कंटक रे का कांटा बहुत खतरनाक होता है। एक बड़े आकार की विष कंटक रे कांटा 40 सेंटीमीटर तक लम्बा हो सकता है। इसके विषैले कांटे के किनारे आरी जैसे होते हैं एवं इनमें नालियां होती हैं। इन्हीं नालियों में विष होता है। विष कंटक रे जब अपने शत्रु पर आक्रमण करती है तो शत्रु के शरीर के भीतर केवल विष ही नहीं

जाता बल्कि उसका मांस भी कट-फट जाता है। सागर अथवा नदी के उथले पानी में तल पर पड़ी विष कंटक रे पर यदि मानव का पैर पड़ जाये तो पैर इतना कट-फट जाता है कि टांके लगवाने पड़ते हैं। इसके छोटे से कांटे के विष से भी मानव अचेत हो जाता है। विष कंटक रे का विष तुरन्त प्रभाव डालता है। इसके विष के प्रभाव से कांटे लगे स्थान पर तेज जलन तथा भयानक दर्द होता है। इसके साथ ही विष कंटक रे के विष के प्रभाव से हृदय की धड़कनें तेज हो जाती हैं। इसका विष हृदय, तंत्रिका तंत्र और श्वसन तंत्र तीनों पर सीधा प्रभाव डालता है जिससे व्यक्ति की मृत्यु तक हो सकती है। अत: विष कंटक रे का कांटा लग जाने पर तुरन्त प्राथमिक उपचार करना चाहिए। विष कंटक रे का कांटा लगने पर घाव को तुरन्त साफ करके घायल भाग को एक घंटे तक गर्म पानी में रखना चाहिये तथा ए.टी. एस. का इंजेक्शन दे देना चाहिए। इस प्राथमिक उपचार के बाद सम्बन्ध व्यक्ति को डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। इससे उसके जीवित बचने की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं।

विष कंटक रे की शारीरिक संरचना सामान्य समुद्री मछलियों से पूरी तरह भिन्न होती है। विष कंटक रे का शरीर चपटा और डिस्क की तरह गोल होता है। इसके शरीर का व्यास 30 सेंटीमीटर से लेकर 4 मीटर 35 सेंटीमीटर तक होता है। इसी प्रकार इसका वजन भी 680 ग्राम से लेकर 340 किलोग्राम तक हो सकता है। विष कंटक रे की पीठ तथा ऊपर का रंग ग्रे अथवा कत्थई होता है एवं कभी-कभी इस पर सफेद धब्बे अथवा संगमरमर जैसे निशान होते हैं। इसका पेट और नीचे का भाग सफेद अथवा क्रीम जैसा सफेद होता है। विष कंटक रे के शरीर की सतह चिकनी होती है एवं शरीर के अन्त में कम से कम शरीर के बराबर की ही एक पूँछ होती है। इसकी पूँछ पतली और कोड़े जैसी होती है तथा पूँछ में ही एक लम्बा विषैला कांटा होता है। इसका विषैला कांटा सामान्यतया 7.5 सेंटीमीटर से लेकर 10 सेंटीमीटर तक लम्बा होता है किन्तु कभी-कभी 40 सेंटीमीटर तक लम्बे विषैले कांटे वाली विष कंटक रे भी देखने को मिल जाती है। विष कंटक रे की छाती के मीनपंख पंख जैसे होते हैं। इसके पीठ का मीनपंख नहीं होता।

रे और शार्क मछलियों में अस्थिधारी मछलियों के समान शल्क नहीं होते हैं। इनकी त्वचा पर बहुत छोटे-छोटे त्वचा दंत (डेंटिकल्स) होते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि विष कंटक रे का विषैला कांटा एक बढ़ा हुआ एवं परिमार्जित त्वचा दंत ही है। विष कंटक रे के त्वचादंत की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यदि इसका कांटा टूट जाये या निकल जाये तो शीघ्र ही नया कांटा निकल आता है। वास्तव में विष कंटक रे के कांटे कई बार निकलते हैं। यदि इसका नया कांटा निकलने के पहले पुराना कांटा नहीं गिरता तो इसकी पूँछ पर एक ही स्थान पर दो तीन अथवा चार कांटे निकल आते हैं

बाल कविता : सुकीर्ति भटनागर

मंजिल मिल ही जाती है

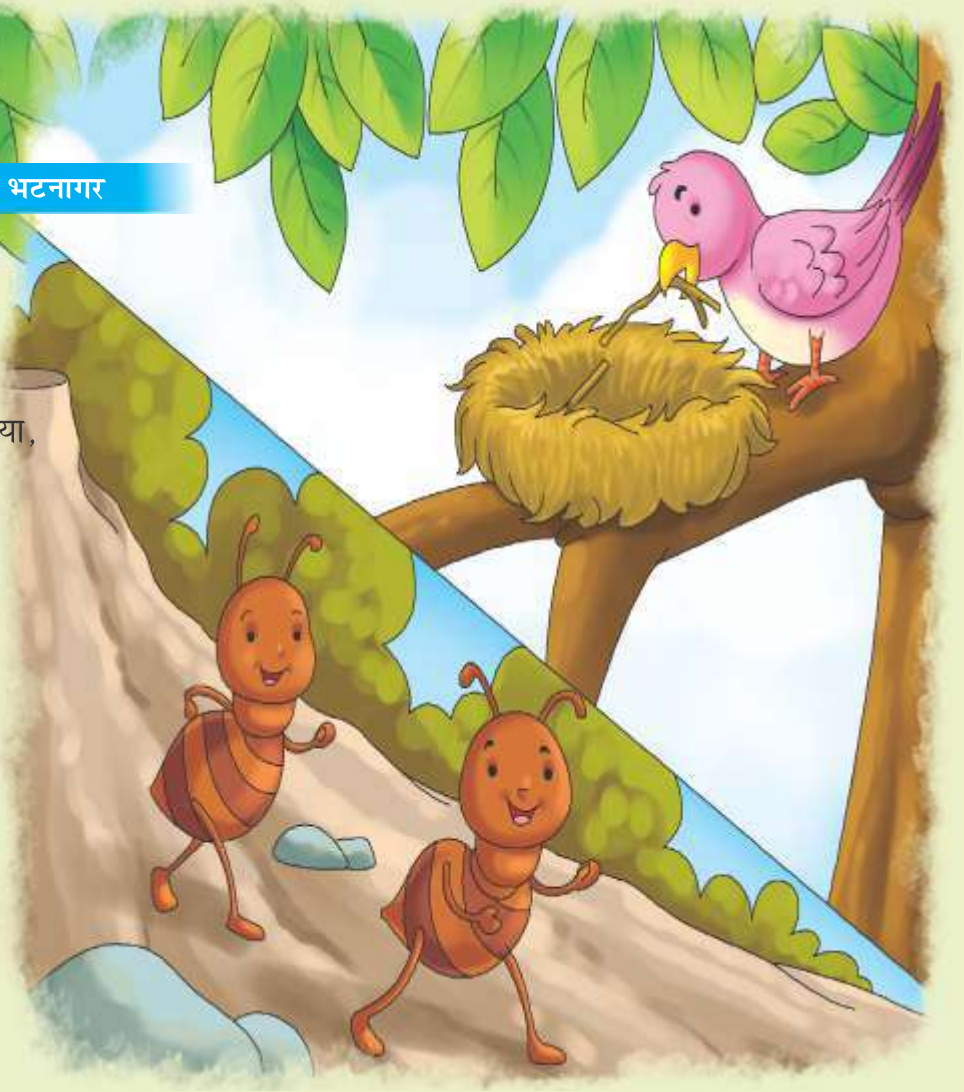

तिनका-तिनका लाकर चिड़िया,
अपना नीड़ बनाती है।
नन्हीं-सी चींटी को देखो,
बस चलती ही जाती है।।

घूम-घूमकर मधुमक्खी भी,
फूलों पर मंडराती है।
ले पराग फिर धीरे-धीरे,
मीठा शहद जुटाती है।।

धीरज का तुम साथ न छोड़ो,
कुदरत यह समझाती है।
लगन अगर हो मन में सच्ची,
मंजिल मिल ही जाती है।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

जीवन में कुछ काम करो

जीवन में कुछ काम करो,
इस जग में कुछ नाम करो।
सेवा का फल मीठा होता,
बड़ों का नित् सम्मान करो।

व्यर्थ न जीवन बीते यह,
जीवन का कल्याण करो।
सुख पहुँचाओ तुम सबको,
अहिंसा का नित् ध्यान करो।
मानव तन अनमोल रतन,
इसका न अभिमान करो।

प्रस्तुति : राधा नाचीज़

पहेलियां

1. जब थी मैं भोली-भाली,
तब पहनी चोली हरियाली।
जब भए सर नये बार,
तब पहना मोतियों का हार।।

2. जल से निकली थल धरा,
थल जाए कुम्हलाय।
लाओ आग फूंक दूँ,
उमर बेल बढ़ जाए।।

3. छोटी चपाती बड़ी चपाती,
लड़ती छका छक।
बड़े मियां बाहर भागे,
करते फका फक।।

4. दुनियाभर की करता सैर,
धरती पर न रखता पैर।
दिन में सोता रात में जागता,
न रंग बदले, न किसी से बैर।।

5. न देखे न बोले,
फिर भी भेद खोले।

6. मेरे नाम से सब डरते हैं,
मेरे लिए परिश्रम करते हैं।

7. जला के हमने उसे बनाया,
आँखों में वह खूब समाया।
अभी न बता और चल,
सूखे का सूख और जल का जल।।

8. छम-छम करके शोर मचाए,
सोतों को वह आन जगाए।
एक पलक में शान जताए,
रोतों को वह आन हँसाए।।

9. छः अक्षर का मेरा नाम,
आकाश में उड़ना मेरा काम।
पर लगता अतिशय दाम,
बतलाओ अब इसका नाम?

10. तीन रंग की लहर,
नील गगन में भरे उड़ान।
ये है सबकी आँखों का तारा,
हम सब करते इसका सम्मान।।

11. ये धनुष है सबको भाता,
मगर लड़ने के काम न आता।

12. अजब सुनी है इक बात,
नीचे फल और ऊपर पात।
जल्द सुलझाओ इसको आप?

13. ऐसी कौन सी चीज है,
जो पानी से पैदा होती है,
और भोजन में सबके रहती है।

(उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

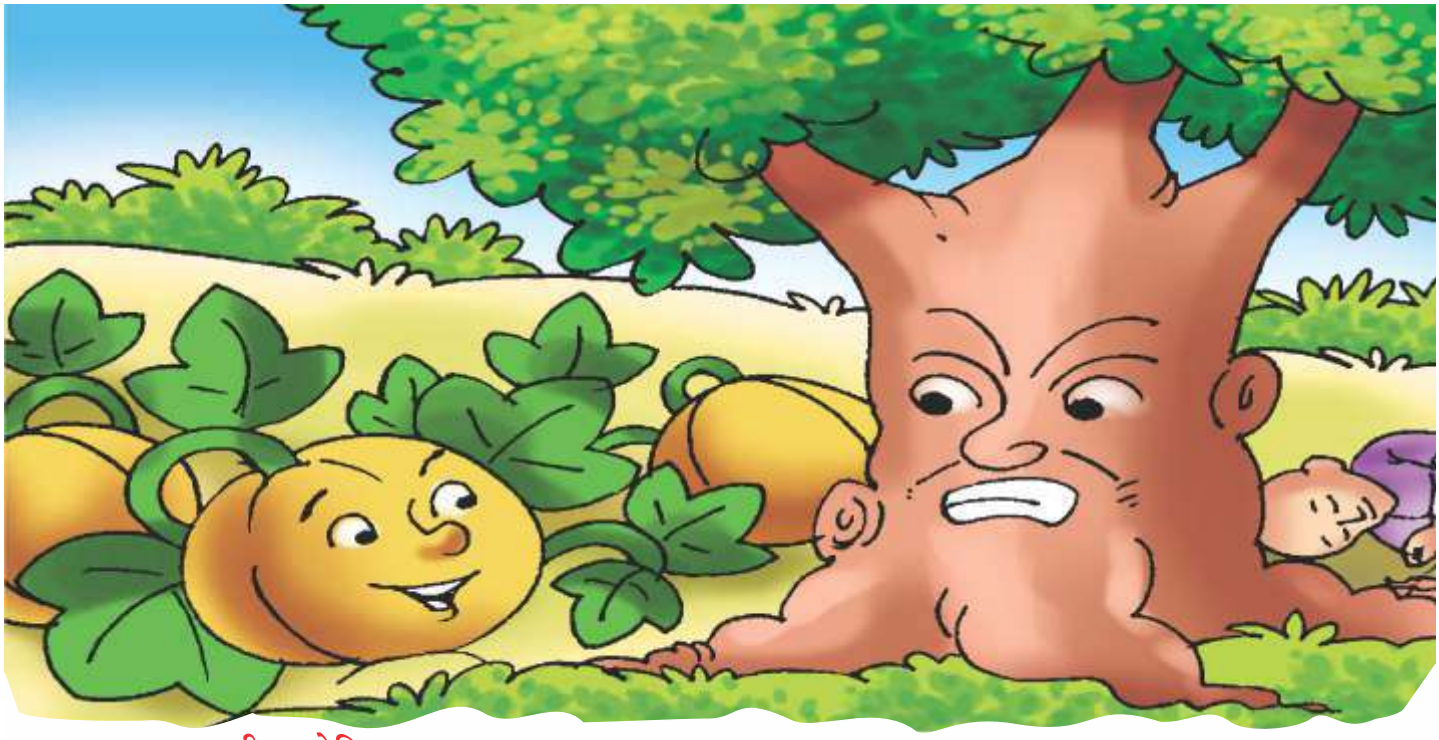

बाल कहानी : गोविन्द भारद्वाज

प्रकृति का नियम

एक खेत के पास विशाल पीपल का पेड़ था। खेत में कद्दू की बेलें थीं जिनमें मोटे और बड़े-बड़े कद्दू लगे हुए थे। पीपल और कद्दुओं में जान-पहचान हो गई।

एक दिन पीपल बहुत उदास था। कद्दुओं ने जब पीपल को उदास देखा तो कद्दू ने पूछा– ''पीपल भैया, आज आप उदास क्यों हो?''

''नहीं ... नहीं ... कोई विशेष बात नहीं है।'' पीपल ने उदास मन से उत्तर दिया।

कद्दू बोला– ''आप तो सदा हँसते-मुस्कुराते रहते हो, आज कोई तो बात है।''

पीपल ने कहा– ''मैं इसलिए उदास हूँ कि मेरी काया तो इतनी विशाल है किन्तु मेरे फल बिल्कुल छोटे-छोटे। मुझे अपने आप से घृणा सी हो गई है।''

''बात तो तुम ठीक कह रहे हो भैया। आपकी बात क्या? आप हमें ही देख लो। हम इतने मोटे और बड़े हैं जबकि हमारी बेल बिल्कुल कमजोर। जो अपने सहारे खड़ी भी नहीं हो सकती। हमें इन बेलों को देखकर शर्म आती है। हमको तो आप जैसे पेड़ों के फल होने चाहिए थे।'' कद्दू ने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा।

पीपल बोला– ''काश! तुम मेरी शाखाओं पर लटके हुए होते और मेरे ये नन्हें-नन्हें फल तुम्हारी बेलों पर।''

उस पीपल के पेड़ के नीचे एक महात्मा आराम कर रहे थे। उन्होंने कद्दू और पीपल की बात सुन ली। वे उठकर पीपल से बोले– ''पीपल भैया, तुम्हारे मन की बात मैंने सुन ली किन्तु भैया ईश्वर ने प्रत्येक पेड़-पौधे,

को बदलना हम सबके लिए हानिकारक हो सकता है।'' महात्मा जी ने समझाते हुए कहा।

''महाराज, हमारी हानि की चिन्ता बिल्कुल मत करो। कृपया आप हमें वरदान दे दो। मैं और कद्दू आपके सदा आभारी रहेंगे।'' पीपल ने प्रार्थना करते हुए कहा।

महात्मा जी को उन पर दया आ गई और प्रभु स्मरण कने लगे। थोड़ी देर में सब कुछ बदल गया। पीपल के पेड़ पर कद्दू लटक गये और बेलों पर पीपल के लाल-लाल छोटे-छोटे फल। पीपल और कद्दू बड़े खुश हुए।

महात्मा को उन्होंने धन्यवाद दिया। महात्मा अपना कमण्डल उठाकर चले गये। दूसरे दिन जब किसान मंडी में बेचने के लिए कद्दुओं को तोड़ने आया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि मेरे खेत की फसल खराब हो गई। अत: इन बेलों को उखाड़ने में ही भलाई है। उसने सारी बेलों को

जीव-जन्तुओं को बड़ा सोच-समझकर बनाया है। इसमें हम सबकी भलाई छिपी रहती है।''

''कैसी भलाई महाराज? कम से कम उनके आकार-प्रकार, कद-काठी का तो ईश्वर को ध्यान रखना चाहिए था।'' पीपल ने ईश्वर को कोसते हुए कहा।

कद्दू भी बिना बोले नहीं रहा। वह बोला– ''भलाई-वलाई कुछ नहीं महाराज! ये तो ईश्वर का अन्याय है।''

''नहीं कद्दू भाई ऐसा मत बोलो। ईश्वर हम सबका जन्मदाता है।'' महात्मा ने कद्दू से कहा।

पीपल ने महात्मा की आदर्श बातें सुनकर कहा– ''महाराज! आप तो ईश्वर के उपासक हैं। आप हमें ऐसा वरदान क्यों नहीं देते जिससे मेरी शाखाओं पर कद्दू लटक जाएं और मेरे फल इन बेलों पर लग जाएं।''

''पीपल भैया प्रकृति के नियम को बदलना अन्याय है। वरदान तो मैं दे सकता हूँ किन्तु ईश्वर के कानून

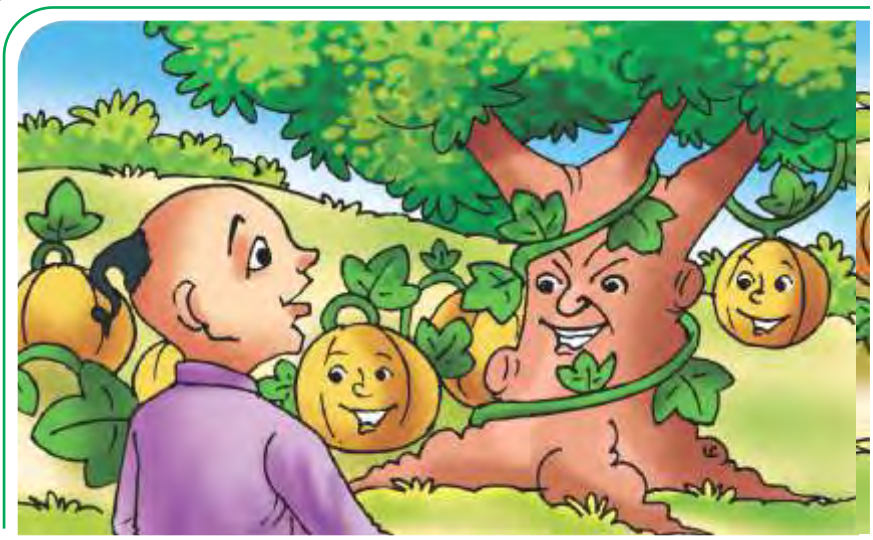

जड़ से उखाड़ दिया और दूसरी फसल बोने का निर्णय कर लिया।

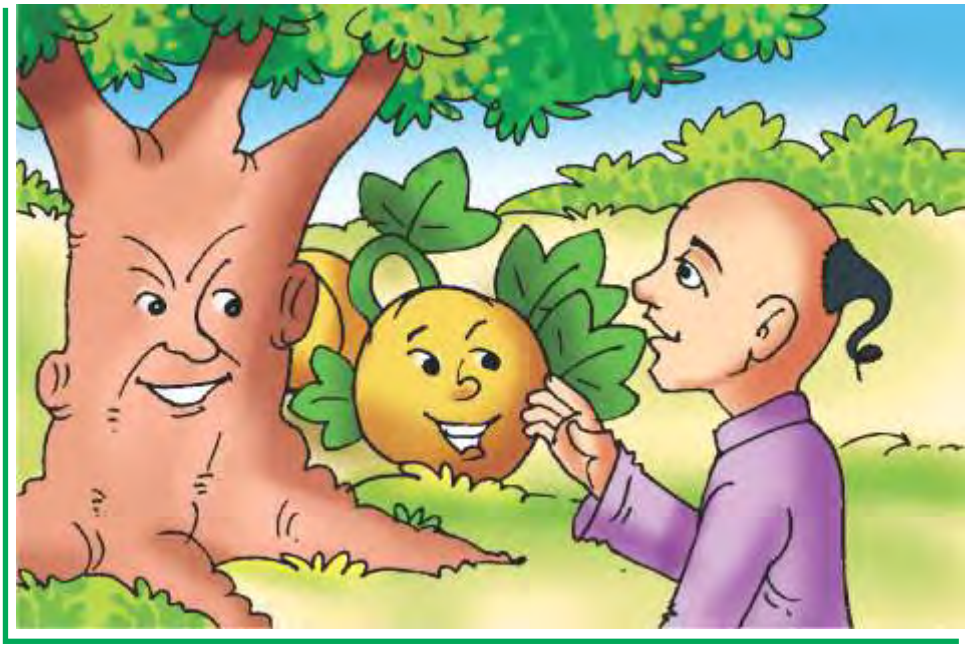

उधर आते-जाते यात्री परेशान। क्योंकि जो भी पीपल के नीचे से गुजरता उसी पर कद्दू टूटकर गिर जाता। वे घायल होने लगे। एक दिन एक बढ़ई वहाँ से गुजरा। एक बड़ा-सा कद्दू बढ़ई के ऊपर आकर गिरा। उसका सिर फूट गया। उसने गाँववालों को कद्दू की घटना बताई। गाँववालों ने उस पीपल को काटने का निर्णय ले लिया। अगले दिन बढ़ई अपने कुछ साथियों के साथ आया और पीपल को काटने लगा। पीपल बड़ा दु:खी हुआ। उसने कद्दुओं को भला-बुरा कहा तो कद्दुओं ने भी कहा कि तुम्हारे कारण तो किसान ने हमारी बेलें ही काट दीं। दोनों में जोर-जोर से तकरार शुरू हो गई।

उसी समय वही महात्मा पीपल को आता दिखाई दिया। वह जोर से चिल्लाया। महात्मा ने पीपल की आवाज सुन ली। वे उसके पास आये। महात्मा बढ़ई को देखकर समझ गये कि पीपल को क्यों काटा जा रहा है। पीपल रुआंसा होकर बोला– ''महाराज, मुझे बचाओ।''

महात्मा बोले– ''भैया मैंने तो पहले ही कहा था कि प्रकृति के नियम के विरुद्ध कोई काम करोगे तो हानि होगी।''

''मुझे तो वे नन्हें-नन्हें फल ही लौटा दो वरना ये लोग मुझे जड़ से काट डालेंगे।'' पीपल ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

कद्दू भी बोले– ''महाराज! हमें भी क्षमा करें और इस पीपल को अवश्य बचा लो। वरना हमारी गलती के कारण पेड़ पर रहने वाले पक्षियों के घर बर्बाद हो जायेंगे।''

महात्मा ने अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा फिर से पीपल को छोटे-छोटे फलों से लाद दिया। कद्दू अपना अस्तित्व खो चुके थे। महात्मा ने बढ़ई को समझा दिया। अब पीपल अपने छोटे फलों के साथ खुश था।

प्रस्तुति : अभिसार जैन

परीक्षा के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

वैसे तो हर छात्र/छात्रा को परीक्षा के दौरान क्या करना चाहिए इसकी जानकारी रहती है किन्तु कई बार जल्दबाजी में परीक्षा का तनाव होने से घबराहट व चिंता के कारण भी कई बातें हम भूल जाते हैं, उस समय कहीं पढ़ने में यह बातें ध्यान में आ जाती हैं तो परीक्षार्थी विशेष सतर्क व सावधानी रखता है। सभी बातें साधारण सहज व सरल हैं किन्तु कभी-कभी साधारण-सी बात भी काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

1. परीक्षा देने जाने से एक रात्रि पूर्व सभी सामान, प्रवेश-पत्र, पेंसिल, स्केल, पेन, परिचय-पत्र आदि को यथास्थान रखें।
2. परीक्षा का समय प्रात:काल है तो प्रात: जल्दी उठकर पढ़ें। रात्रि कदापि न जागें। प्रात: एक घंटे सभी मुख्य बिन्दुओं को दोहरा लें व निर्धारित समय से पूर्व पहुँचे।
3. यदि परीक्षा केन्द्र दूर है और आपको साइकिल, मोटर साइकिल से जाना है तो एक घंटे पहले चैक कर लें वाहन में कोई खराबी, पंक्चर इत्यादि तो नहीं है। यदि टैम्पो-टैक्सी, सिटीबस से जाना है तो समय का मार्जिन अवश्य रखें।
4. परीक्षा स्थल पर परीक्षा सामग्री के अतिरिक्त कुछ नहीं ले जायें। कभी नकल करने की सामग्री न ले जायें। नकल के भरोसे आज तक किसी भी छात्र ने योग्यता प्राप्त नहीं की है।
5. बहुत से छात्रों को परीक्षा से घबराहट हो जाती है अत: स्वयं पर नियंत्रण रखें। बहुत सहजता व सरलता रखें, धैर्य रखें। चिंता व तनाव तो किसी भी समस्या का समाधान हो ही नहीं सकता है।
6. उत्तर-पुस्तिका प्राप्त होते ही अपने नामांकन, विषय, दिन, दिनांक आदि आवश्यक पूर्ति सर्वप्रथम करें। प्रश्न-पत्र वितरित होने के बाद उसे बहुत ही शान्ति से पढ़ें। यह समय बहुत ही संवेदनशील होता है। सभी निर्देशों को ध्यान से पढ़ें व उसी के अनुरूप लिखें। सर्वप्रथम वही प्रश्न करें जिसे आप सर्वश्रेष्ठ तरीके से कर सकते हैं। शब्द सीमा व समय का पूरा ध्यान रखें। उत्तर-पुस्तिका में प्रश्न क्रमांक लिखना नहीं भूलें।
7. सुन्दर, स्पष्ट व स्वच्छ लेखनी का परीक्षक पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। मात्राएं सही होनी चाहिए, गलत मात्राएं परीक्षक पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। उत्तर लिखते समय सबसे पहले परिभाषा या कोटेशन से शुरूआत करें। इससे उत्तर बहुत ही अच्छे तरीके से लिखा जा सकता है तथा जांचकर्ता भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।
8. यदि परीक्षा का समय दोपहर का है तो घर से जाते समय पानी पीकर जायें, दोपहर के भोजन में दही, प्याज का सेवन न करें अन्यथा दोपहर में आलस्य आयेगा। गर्मी के दिनों में मई-जून में लू का प्रकोप रहता है। अत: विशेष सावधानी रखें।

पौराणिक कथा : परशुराम संबल

कालयवन का वध

मुचुकुन्द इक्ष्वाकुवंशी महाराज मांधाता के पुत्र थे। वे ईश्वर भक्त, परमवीर और सच्चाई की राह पर चलने वाले थे। एक बार देवराज इन्द्र और असुरों में युद्ध छिड़ गया। युद्ध में असुर देवताओं पर भारी पड़ रहे थे और इन्द्र परास्त होने की दशा में थे। उनके पास उस समय कोई योग्य सेनापति भी नहीं था। इन्द्रदेव महाराज मुचुकुन्द की शरण में गये और उनसे देवताओं की रक्षा के लिये निवेदन किया। दयालु महाराज मुचुकुन्द ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और देवताओं की ओर से युद्ध में शामिल हो गये। देवताओं की ओर से उन्होंने घमासान युद्ध किया और असुरों को परास्त करके उनकी रक्षा की।

बाद में देवताओं की ओर से भगवान शंकर के ज्येष्ठ पुत्र स्वामी कार्तिकेय ने सेनापति पद स्वीकार कर लिया। लम्बे समय तक युद्धरत रहने के कारण राजा मुचुकुन्द को युद्धभूमि से अवकाश मिल गया। देवराज इन्द्र राजा मुचुकुन्द के द्वारा युद्धभूमि में दिखाये गये साहस और पराक्रम से अति प्रसन्न थे। उन्होंने राजा को बड़े विनम्र भाव से कहा– हे राजन्! हम सब आपके आभारी हैं। आपके शौर्य और पराक्रम से अति प्रसन्न हैं। आप कोई इच्छित वर मांगकर हमें अनुग्रहीत करें। मोक्ष को छोड़कर हमारे पास सभी कुछ सुलभ है। मोक्ष प्रदान करने का अधिकार तो केवल कृपासिंधु भगवान को ही है।

राजा मुचुकुन्द लगातार युद्ध करते रहने के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह थके हुए थे। बेचैनी महसूस कर रहे थे। युद्धकाल में वे लगातार युद्ध करते रहने के कारण कई रातों से सो भी नहीं पाये थे। वे इन्द्रदेव से बोले– देवराज! मैं कुछ समय के लिये नींद चाहता हूँ। गहरी और आराम की नींद। मुझे आप यह वर देने की कृपा करें कि जो भी मेरी नींद में आकर विघ्न पहुँचाये वह तत्काल भस्म हो जाये।

'तथास्तु।' देवराज इन्द्र ने राजा को इच्छित वर दे दिया। वर प्राप्त करके राजा मुचुकुन्द एक गुफा में जाकर गहरी निद्रा में सो गये।

उधर भगवान श्रीकृष्ण का विरोधी और जरासंध का मित्र जिसका नाम कालयवन था। वह अत्यन्त पराक्रमी और बलशाली था। वह श्रीकृष्ण से अपने मित्र की मौत का बदला लेने की ताक में था। बहुत दिनों से अपनी सेना के द्वारा उसने मथुरा को घेर रखा था। भगवान श्रीकृष्ण युद्ध नहीं करना चाहते थे इसलिये उन्होंने कालयवन को समाप्त करने के लिए लीला रची।

एक दिन वे पीताम्बर ओढ़े हुए हाथ में बिना कोई अस्त्र-शस्त्र लिये मथुरा के मुख्य द्वार से निकले। कालयवन ने उन्हें दूर से ही देखकर पहचान लिया। वह भगवान श्रीकृष्ण को मारने के लिए उनकी ओर भाग पड़ा। श्रीकृष्ण उसे भागता देखकर स्वयं भी थोड़ी और तेजी से भागने लगे जिससे कालयवन को लगे कि वे भयभीत होकर भाग रहे हैं।

भागते-भागते श्रीकृष्ण आकर उस गुफा में घुस गये जहाँ राजा मुचुकुन्द सोये पड़े थे। उन्होंने अपना पीताम्बर उतारकर राजा के ऊपर डाल दिया और अपने आप एक विशाल शिला की आड़ में छुपकर खड़े हो गये। कालयवन भी पीछा करता हुआ गुफा में आ गया। उसने वहाँ एक पीताम्बरधारी को सोते हुए देखा तो सोचा कि अवश्य ही यह श्रीकृष्ण का छल है। उसने मुझे छलने के लिए अपना मुँह ढक लिया होगा और सोने का नाटक कर रहा होगा। कालयवन ने उस पर लात से प्रहार किया। लात के प्रहार से राजा मुचुकुन्द की निद्रा भंग हो गई। उन्होंने आँखें खोल लीं। उनकी दृष्टि सीधी कालयवन पर पड़ी। इन्द्रदेव के वरदान के कारण कालयवन तत्काल वहीं भस्म हो गया।

कालयवन के भस्म होते ही कृपालु भगवान श्रीकृष्ण अपनी दिव्य ज्योति फैलाते हुए राजा मुचुकुन्द के समक्ष प्रकट हुए और कहा– राजन्! मैं तुम पर कृपा करने के लिये ही गुफा में आया हूँ। तुमने पहले मेरी बहुत आराधना की है। मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।

राजा मुचुकुन्द भगवान की अद्‌भुत कृपा और दर्शन प्राप्त करके गद्‌गद् हो गये।

– कथा की सार्थकता यह बतलाती है कि दूसरों की सहायता के लिये किये गये किसी भी कार्य का फल भी सदा शुभ ही होता है। कालयवन नामक दानव के अन्त के लिये ही मुचुकुन्द को दिया गया विनाशकारी वरदान का सदुपयोग किया गया। बुराई का अन्त हर तरीके से होना ही चाहिए।

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

सुन्दर रंग-रंगीली होली

गुझिया सी शरमीली होली।
सुन्दर रंग-रंगीली होली।

चौराहों पर जली होलिका–
कितनी रही हठीली होली।

आसमान तक रंग-गुलाल से–
सज-धज के आई होली।

खूबसूरत रंगों का मौसम है–
गीली नीली पीली होली।

सबको गले लगाओ साथी–
रहो प्रेम से कहे ये होली।

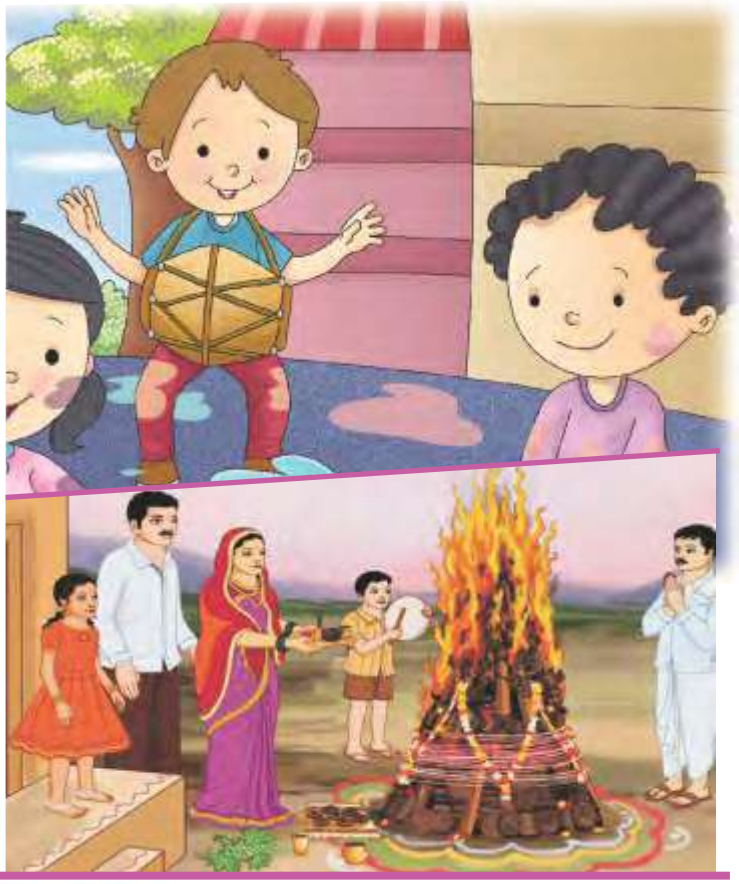

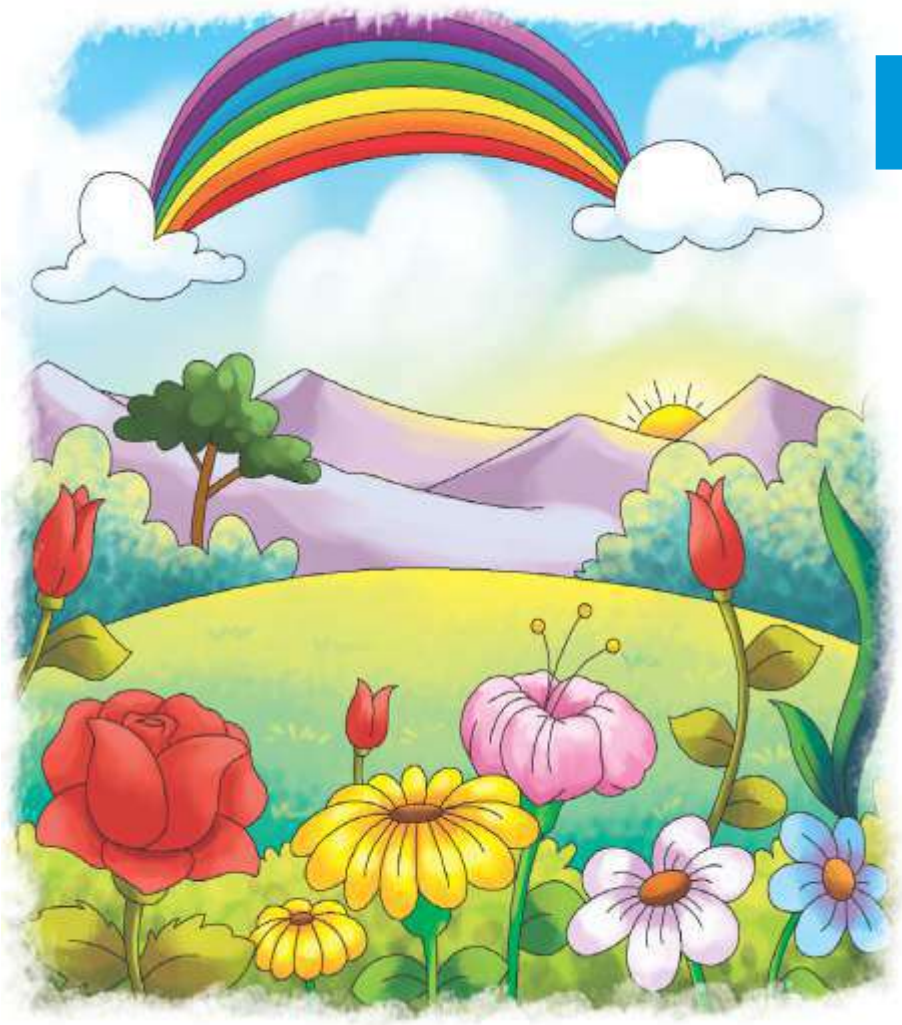

कविता : गोविन्द भारद्वाज

कलियां

कितनी प्यारी-प्यारी कलियां,
खिलती क्यारी-क्यारी कलियां।

फूलों का है बचपन कलियां,
महकाती हैं उपवन कलियां।

दिखती रंग-बिरंगी कलियां,
इन्द्रधनुषी सतरंगी कलियां।

मीठा पराग बनाती कलियां,
प्रेम रस सा पिलाती कलियां।

मिलती न्यारी-न्यारी कलियां,
कितनी प्यारी-प्यारी कलियां।

लेख : जसविंदर शर्मा

पृथ्वी का निरंतर बढ़ता तापमान

ग्लोबल वार्मिंग का सीधा अर्थ है- हर वर्ष पृथ्वी के धरातल के औसत तापमान में वृद्धि होना। इसके भयानक परिणाम सामने आने लगे हैं। पृथ्वी के आसपास गैसों से भरे वातावरण की एक चादर है जिसमें हम रहते हैं और सांस लेते हैं। इस चादर में मुख्यत: दो गैसें यानि नाइट्रोजन और ऑक्सीजन बहुतायत में है। हमारे वातावरण में पानी के वाष्पकण, कार्बन डाई-ऑक्साइड और मीथेन गैसें भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

पानी के वाष्पकण, कार्बन डाई-ऑक्साइड और मीथेन धरती की गर्मी को सोखते हैं और नमी को बाहरी स्पेस में जाने से रोकते हैं जिसके कारण धरती के वातावरण का तापमान बढ़ता है। इसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहा जाता है। पानी के वाष्पकण 50 प्रतिशत, कार्बन डाई-ऑक्साइड 26 प्रतिशत और मीथेन 9 प्रतिशत ग्रीनहाउस पैदा करते हैं और इसीलिए इन तीनों तत्वों को ग्रीनहाउस गैसें कहा जाता है।

ये ग्रीनहाउस गैसें धरती पर ऐसा प्रभाव पैदा करती हैं जैसे कांचघर के शीशे गर्मी को अपने अन्दर रोकते हैं। ग्रीनहाउस गैसों के आभमंडल से गुजरकर सूरज की किरणें धरती पर पड़ती हैं जब धरती का धरातल यानि भूमि, पानी और वायुमण्डल सूरज की ऊर्जा को अवशोषित करते हैं परन्तु फिर भी कुछ ऊर्जा वापिस स्पेस में लौट जाती है। बहुतायत में यह ऊर्जा ग्रीनहाउस गैसों के कारण धरती पर रह जाती है।

ग्रीनहाउस प्रभाव पृथ्वी के लिए बहुत उपयोगी है। इसके बिना धरती इतनी गर्म नहीं हो पाती जितना तापमान जीवधारियों और पौधों को

जिन्दा रहने के लिए जरूरी होता है। परन्तु अगर यह ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ता है तो धरती सामान्य से ज्यादा गर्म हो जाएगी। धरती पर बढ़ा जरा-सा तापमान जीवधारियों और पौधों के लिए कई मुसीबतें ला सकता है।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि पिछली एक सदी से धरती के औसत तापमान में एक डिग्री फॉरनहाइट की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों को पूरा विश्वास है कि आने वाले 200 वर्षों में हमारी धरती के औसत तापमान में 6 डिग्री फॉरनहाइट तक की बढ़ोतरी हो जाएगी। धरती पर बढ़े इस तापमान से वर्षा के पैटर्न (स्वरूप) में विचित्र बदलाव होंगे, समुद्र का जलस्तर बहुत बढ़ जाएगा तथा धरती पर पौधों और प्राणियों के जीवन बुरी तरह प्रभावित होंगे।

धरती पर वातावरण के परिवर्तन सम्बन्धी इंटर-गर्वनमेंट पैनल यानि आई.पी.सी.सी. ने निष्कर्ष निकाला है कि ग्रीनहाउस गैसों के घनत्व में वृद्धि का मुख्य कारण है कि पिछले 100 सालों में हमने जीवाश्म ईंधनों यानि पेट्रोल व डीजल आदि का जमकर इस्तेमाल किया है तथा वनों की अंधाधुध कटाई की है। औद्योगिक क्रांति के कारण धरती का तापमान गरमाने लगा है।

कुछ तथ्य बेहद चौंकाने वाले हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वातावरण में कार्बन डाई-ऑक्साइड लेने की क्षमता घटी है क्योंकि वनों का लगभग सफाया हो चुका है। पौधों में कार्बन डाई-ऑक्साइड का घनत्व 380 कण प्रति दस लाख कण है तथा सन् 2050 में यह घनत्व बढ़कर 550 कण प्रति दस लाख कण हो जाएगा। ग्रीनहाउस की अन्य गैसों के घनत्व में भी आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हो रही है जो मानव जाति के लिए आने वाले खतरों की तरफ संकेत है।

ग्लोबल वार्मिंग की मौजूदगी के प्रमाण हमारे सामने हैं। पिछले कुछ दशकों से लगातार बढ़ते गर्म वर्ष तथा भयावह समुद्री तूफान जैसे सुनामी, कैटरीना आदि बताते हैं कि धरती में भयानक बारिश हुई जिसमें एक ही दिन में रिकॉर्ड तोड़ 94 सेंटीमीटर वर्षा हुई थी। यूरोप के कुछ देशों में ग्रीष्मकाल में तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक होना ग्लोबल वार्मिंग के प्रत्यक्ष संकेत हैं।

ग्लेशियर वातावरण परिवर्तन के सबसे संवेदी सूचक माने जाते हैं। वैज्ञानिकों ने 1970 से लेकर अब तक मुख्य गलेशियरों की इन्वेंटरी बनाई और पाया कि हिमालय, अलास्का और एंडी पर्वतमालाओं के ग्लेशियर लगातार सिकुड़ रहे हैं। आर्कटिक कैप पिघल रही है। आर्कटिक इलाकों में साधारणतया गर्म क्षेत्रों वाले पौधे उगना यह दिखाता है हम लोग बहुत जल्दी बड़ी मुसीबत में फंसने वाले हैं।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
आर्यमन प्रजापति

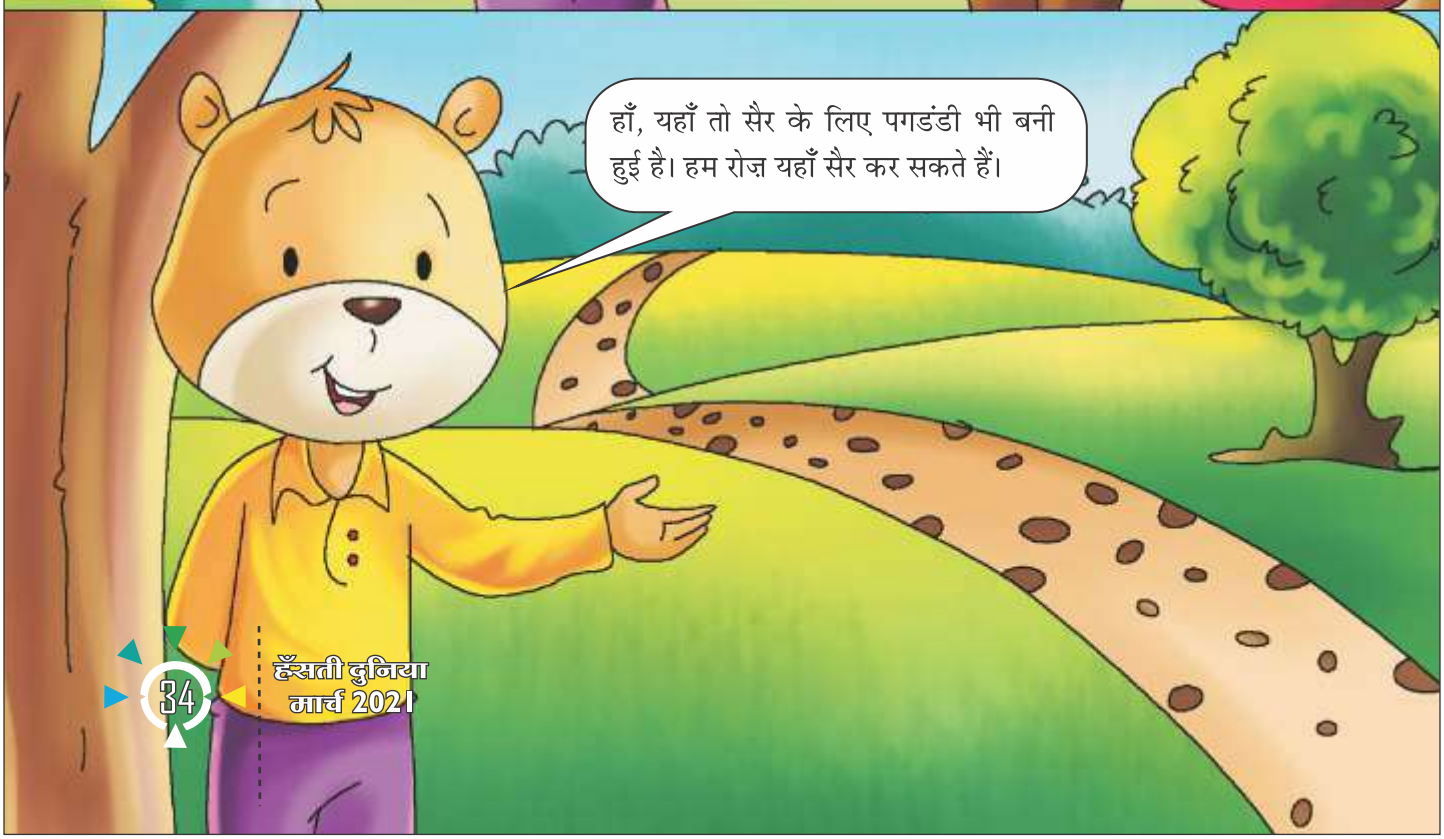

यहाँ तो कितने सुंदर फूल खिले हुए हैं। लाल, पीला गुलाब, गेंदा वाह! क्या खुश्बू आ रही है फूलों से।
चलो, फूल तोड़कर माला बनाते हैं। और कुछ फूलों की पत्तियाँ तोड़कर होली खेलते हैं।
नहीं किट्टी! देखो वहाँ पर बोर्ड लगा है–'फूल तोड़ना मना है।' इसलिए हमें फूल नहीं तोड़ने चाहिए।
फूल तोड़ना मना है।

चिंटू, तुम अपना भाषण बंद करो। हम नहीं तोड़ेंगे तो और कोई तो तोड़ेगा ना! फिर पहले हम ही क्यों न तोड़ लें।
लेकिन किट्टी, हमें कोई अधिकार नहीं है कि पार्क की खूबसूरती को खराब करें। ये हमारी सम्पत्ति नहीं है।
फूल तोड़ना मना है।
लो, अब ये हो गई मेरी सम्पत्ति।
किट्टी, तुम नहीं जानती कि फूलों से हम साबुन इत्र, गुलकंद शरबत आदि कितनी तरह की चीज़ें बनाते हैं।
अगर सब तुम्हारी तरह फूलों को बर्बाद करने लग जाएँगे तो ये सब चीज़ें कहाँ से आएँगी?

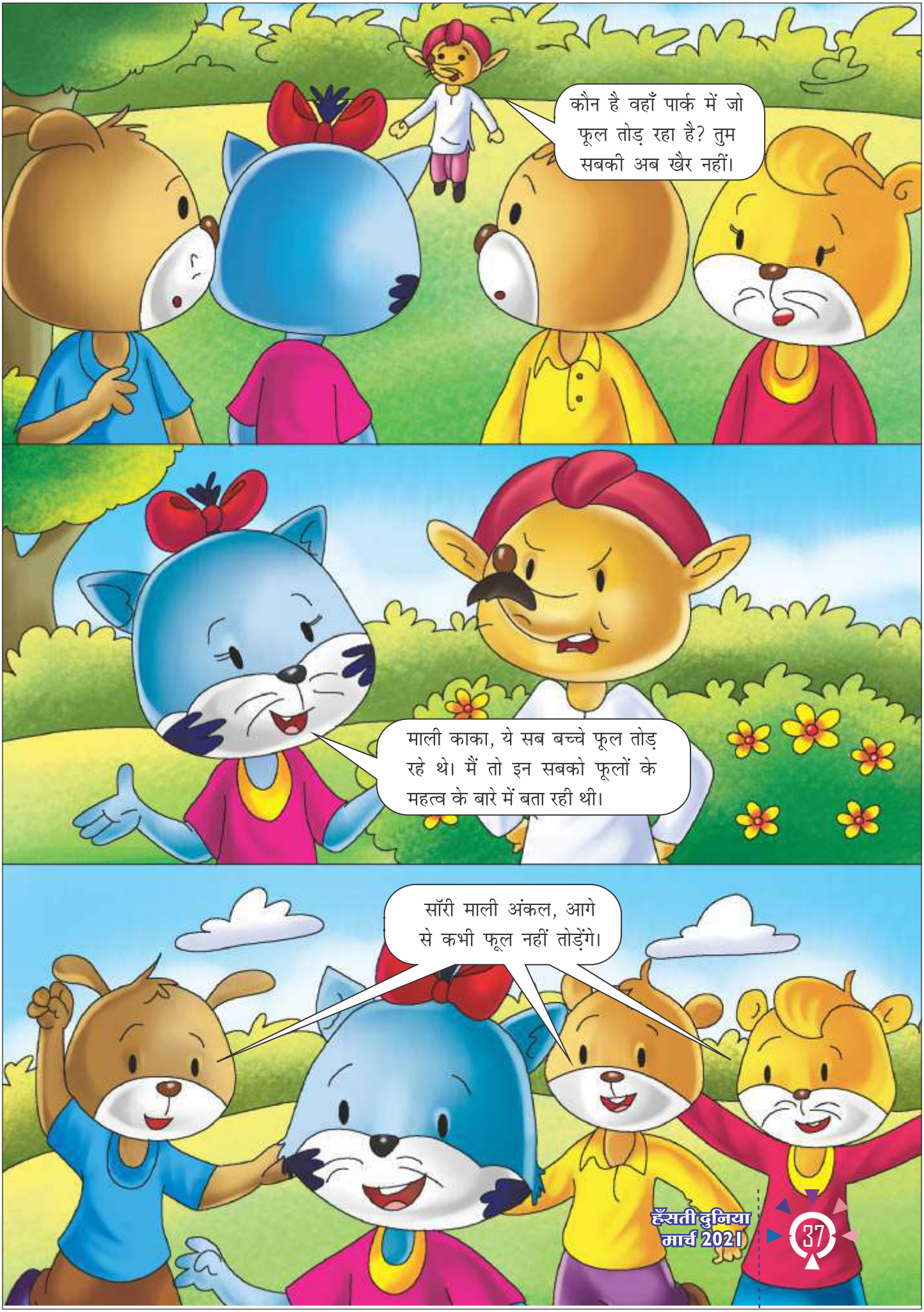
कौन है वहाँ पार्क में जो फूल तोड़ रहा है? तुम सबकी अब खैर नहीं।
माली काका, ये सब बच्चे फूल तोड़ रहे थे। मैं तो इन सबको फूलों के महत्व के बारे में बता रही थी।
सॉरी माली अंकल, आगे से कभी फूल नहीं तोड़ेंगे।

कभी न भूलो

- ब्रह्मज्ञान प्राप्त किये बिना भक्ति आरम्भ नहीं होती।
- महत्वपूर्ण होना अच्छा है लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- आज संसार में इन्सान नजर आते हैं किन्तु इंसानियत नहीं। आज जरूरत है कि इन्सान को प्यार, सहनशीलता एवं मिलवर्तन के भावों से युक्त होकर रहना आ जाये। ऐसे सद्भावों की स्थापना हो जाये तो हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि सारा विश्व खुशहाल हो सकता है। **– बाबा हरदेव सिंह जी**
- इस सनातन नियम को याद रखो– यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो। **– सुभाषचन्द्र बोस**
- उबलते हुए पानी में जिस प्रकार हम अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते, उसी प्रकार हम क्रोधी बनकर नहीं समझ सकते कि हमारी भलाई किस बात में है। **– महात्मा बुद्ध**
- दूसरों के अनुभव से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान है। **– जवाहरलाल नेहरु**
- गरीब वह नहीं है, जिसके पास धन कम है। बल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई है, वह सबसे ज्यादा गरीब है। **– विनोबा भावे**
- आदमी जो कुछ करता है, उससे कहीं अधिक करने की क्षमता उसमें होती है। **– वालपोल**
- शब्द जितने कम होंगे प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है। **– ल्यूथर**
- सच्चे मित्र हीरों की तरह कीमती और दुर्लभ हैं। झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं। **– अरस्तु**
- अच्छे काम करने के लिए किसी बड़े मौके का इन्तजार मत करो बल्कि छोटे-छोटे मौकों से ही लाभ उठाओ। **– रिशर**
- अज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति की संगति ही नरक है। **– उमर खैय्याम**
- महान उद्देश्य और दृढ़ संकल्प वालों के लिए कुछ भी असम्भव नहीं। **– ऐरी शेफर**
- तेरी बुद्धि और हृदय को जो सत्य लगे, वही तेरा कर्तव्य है। **– महात्मा गाँधी**
- नम्रता, मीठे वचन और सत्य मनुष्य के आभूषण होते हैं। **– संत तिरुवल्लुवर**
- अच्छे विचार रखना ही भीतरी सुन्दरता है। **– स्वामी रामतीर्थ**
- अच्छा स्वास्थ्य और एक अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं। **– प्रो. साइरस**
- अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है। **– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**
- निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता । **– रविन्द्रनाथ टैगोर**

बाल हास्य कथा : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

पीचू की होली

पीचू चूहा बहुत शरारती था। दिनभर इधर-उधर मटरगश्ती करता रहता। नन्हीं मोनिका की चहेती मीनू बिल्ली ने उसे न जाने कितनी बार हड़पने की कोशिश की होगी लेकिन पीचू की चालाकी के कारण उसकी हर योजना विफल हो जाती थी। जब भी पीचू, मीनू के सामने पड़ जाता, दोनों की दौड़ शुरू हो जाती। पीचू तो फुर्ती से लपककर कहीं छुप जाता और मीनू मारे गुस्से के दांत पीसती रह जाती।

उस दिन पीचू रसोई के बाहर पड़े चावल के कुछ दाने खा रहा था। तभी मीनू भी टहलती हुई उधर आ गई। पीचू को देखकर उसे भी भूख लग आई। उसने उसे पकड़ने के लिए तेजी से झपट्टा मारा लेकिन पीचू तो उसकी आहट पाते ही सतर्क हो गया था। उसने भी जोर से दौड़ लगाई और सीधे रसोई में जा घुसा। बेचारी मीनू का सिर दरवाजे से टकराते-टकराते बचा। बिना कोई देरी किए वह भी रसोई के अन्दर घुस गई। अब पीचू आगे-आगे और मीनू पीछे-पीछे ...। तभी मीनू ने एक जोरदार छलांग लगाई और पीचू के एकदम पीछे पहुँच गई। यह देखकर पीचू के हाथ-पांव फूल गए। उसने 'आव देखा न ताव' तुरन्त आटे के डिब्बे के ऊपर चढ़कर अलमारी के कोने में छिप गया। मीनू भी जोश में आकर डिब्बे के ऊपर चढ़ गई। लेकिन उसके भारी-भरकम शरीर को बेचारा डिब्बा सहन नहीं कर सका और वह डिब्बे

सहित जमीन पर आ गिरी। गिरने के कारण आटे का डिब्बा भी आग-बबूला हो गया। उसने इतनी जोर से आटा उछाला कि मीनू की आँखों में भी थोड़ा आटा घुस गया। बेचारी को दिन में तारे नज़र आने लगे। ऊँचे से गिरने के कारण उसके पैर में मोच भी आ गई थी। किसी तरह गिरते पड़ते वह रसोई के बाहर चली गई। पीचू महाशय फिर से स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने लगे।

कुछ दिन बाद होली आई। विभिन्न प्रकार के पकवानों पर अपना मुँह मार कर पीचू ने सोचा कि अब कुछ देर छत पर धूप सेंक ली जाए। छत पर पहुँचकर उसने देखा कि एक कोने में मीनू बिल्ली गठरी बनी हुई सो रही है। मीनू को देखकर उसे शरारत सूझी। वह दबे पांव उसके पीछे गया और अपने तेज दांतों से उसकी पूँछ काट ली। दर्द से तिलमिलाकर मीनू एकदम से उठ बैठी।

पीचू को देखकर उसका खून खौल उठा। उसकी आँखों के सामने उस दिन का रसोईवाला दृश्य घूम गया। मारे गुस्से के दांत किटकिटाती मीनू, पीचू पर झपट पड़ी। पीचू यही तो चाहता ही था। उसने जोर से छलांग लगाई और दीवार की मुंडेर पर चढ़ गया। मीनू भी उसके पीछे दीवार पर चढ़ गई।

छत पर रंग से भरा हुआ एक बड़ा-सा ड्रम रखा था। पीचू की नज़र जैसे ही उस ड्रम पर पड़ी उसके दिमाग में एक और शरारत घूम गई। उसने मुंडेर से ही एक छलांग लगाई और ड्रम के कुंडे से लटककर झूलने लगा। मीनू की आँखों में तो क्रोध का भूत सवार था। उसने भी पीचू को पकड़ने के लिए छलांग लगा दी। वह ड्रम के कुंडे तक पहुँच गई लेकिन आज फिर उसके भारी-भरकम शरीर ने उसका साथ नहीं दिया और संतुलन बिगड़ जाने के कारण वह कटी पतंग की तरह ड्रम में जा गिरी। ठंडे पानी में घुले रंग में नहाकर मीनू ठंड से कांपने लगी। पीचू ने ड्रम के अन्दर धीरे से झांका और फिर मुस्कुराकर चिल्लाया- ''बुरा मत मानना मौसी, आज तो होली है।'' बेचारी मीनू बिल्ली गुस्सा पीकर रह गई।

कविता : मदन 'शेखपुरी'

तुम सोने-से खरे हो बच्चो!

हरी घास-से हरे हो बच्चो,
तुम सोने-से खरे हो बच्चो।
फूलों-सी मुस्कान लिए तुम,
प्रेम-प्यार से भरे हो बच्चो।

केवल भूख तुम्हें दुःख देती,
उलझन की नहीं करते खेती।
पल में रूठें पल में मानें,
भेद-भाव से परे हो बच्चो।

लालच, लोभ नहीं है मन में,
खोए रहते अपनेपन में।
भोली-भाली, सीधी-सादी,
इस आदत से घिरे हो बच्चो।

रंग के चाहे गोरे-काले,
लगते हो तुम प्यारे-प्यारे।
हरी घास-से हरे हो बच्चो,
तुम सोने-से खरे हो बच्चो।

बाल कविता : ऊषा सरीन

अच्छे बच्चे, मन के सच्चे

जो बच्चे करते अच्छा काम,
जग में उनका ऊँचा नाम।

करते बड़ों की जो सेवा,
मिलता उन्हीं को मेवा।

पढ़ने में जो ध्यान हैं लगाते,
और सभी का ख्याल है रखते।

दौड़-कूद में आते फस्ट,
कभी न आते उनको कष्ट।

अपने लक्ष्य को बढ़ाते जाते,
काम सभी के वो आते।

करते न कभी लड़ाई-झगड़ा,
'एकत्व' में रहकर बनते तगड़ा।

कहीं रहें वे होकर आज़ाद,
पायें सदा गुरु का आशीर्वाद।

वैज्ञानिक जानकारी : घंमडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : टेलीफोन की तारें गर्मियों में ढीली क्यों हो जाती हैं?

उत्तर : गर्मियों में ताप अधिक होता है। अधिक ताप होने के कारण तारों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और वे फैल जाती हैं। तारों के फैल जाने से उनकी लम्बाई अधिक हो जाती है। यही कारण है कि गर्मियों में टेलीफोन की तारें ढीली पड़ जाती हैं इसके विपरीत सर्दियों में ताप कम रहने से तारें कसी रहती हैं।

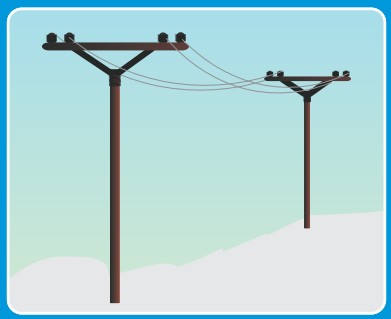

प्रश्न : मच्छर की आवाज़ शेर की आवाज़ से तीखी क्यों होती है?

उत्तर : आवाज़ का तीखा होना ध्वनि की आवृत्ति और प्रबलता पर निर्भर करता है। मच्छर की आवाज़ की आवृत्ति अधिक होती है तथा प्रबलता कम। जबकि शेर की आवाज़ की आवृत्ति कम होती है और प्रबलता अधिक। बस, इसी वजह से ऐसा होता है।

प्रश्न : बिजली के उपकरणों में तीन मुँह वाला प्लग ही क्यों इस्तेमाल किया जाता है?

उत्तर : तीन मुँह वाले प्लग में एक पिन मोटी होती है और शेष दो पिनें बारीक। मोटी पिन से उपकरण की धातु का ढांचा भूमि के सम्पर्क में आ जाता है जिससे बिजली का झटका लगने की सम्भावना कम रहती है। सुरक्षा की दृष्टि को मद्देनज़र रखते हुए ही अधिकतर तीन मुँह वाले प्लग प्रचलन में रहते हैं।

प्रश्न : ठंडे स्थानों पर मकान लकड़ी के क्यों बनाएं जाते हैं?

उत्तर : लकड़ी ऊष्मा की कुचालक है। कुचालक पदार्थों का यह गुण होता है कि वे अन्दर की ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देते और बाहर की ऊष्मा को अन्दर नहीं आने देते। यही कारण है कि ठंडे स्थानों पर मकान प्राय: लकड़ी के बनाये जाते हैं ताकि ठंड में भी मकान गर्म रह सकें।

जानकारीपूर्ण लेख : ईलू रानी

घटता-बढ़ता चंद्रमा

दिन-दिन चंद्रमा का बढ़ना और पूर्णिमा तक पूर्णता को प्राप्त करना और फिर पूर्णिमा से अमावस्या तक लगातार घटते रहना और फिर उसका बढ़ना सचमुच एक कौतुहल का विषय है। वास्तविकता यह है कि चंद्रमा न तो घटता है और न ही बढ़ता है। सूर्य के पड़ने वाले प्रकाश की विविधता के कारण ही यह हमें घटता-बढ़ता दिखाई देता है।

चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। जिस तरह से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। ठीक उसी प्रकार चंद्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा करता है। इसे पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगभग साढ़े उन्तीस दिन लगते हैं। यह सूर्य के प्रकाश से चमकता है। इस पर पड़ने वाला सूर्य का प्रकाश परावर्तित होकर धरती पर पहुँचता है। चंद्रमा का एक ही भाग पृथ्वी की ओर रहता है। इसका दूसरा भाग हमें दिखाई नहीं देता। जब चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तो इसका चमकने वाला भाग हमें दिखाई नहीं देता क्योंकि वह भाग पृथ्वी के विपरीत दिशा में रहता है। केवल अंधकारमय भाग ही हमारे सामने रहता है। अत: हमें चंद्रमा का कोई भाग दमकता हुआ नहीं दिखाई देता। यही अमावस्या का चंद्रमा होता है। जैसे-जैसे चंद्रमा की गति के कारण स्थितियां बदलती हैं। वैसे-वैसे इसकी सतह का कुछ भाग हमें दिखाई देने लगता है। धीरे-धीरे पूर्णिमा तक इसकी प्रकाशित सतह का दिखने वाला भाग बढ़ता जाता है और पूर्णिमा के दिन पृथ्वी से दिखने वाली सतह पूर्ण प्रकाशित हो जाती है और उसे हम पूर्णिमा का चंद्रमा कहते हैं। इस दिन पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के बीच में होती है।

पूर्णिमा के दिन चंद्रमा चमकती तश्तरी जैसा दिखाई देता है, लेकिन घटते-घटते वह अमावस्या की रात को बिल्कुल गायब हो जाता है। चंद्रमा के इस घटने-बढ़ने को चंद्रमा की कलाएं कहा जाता है।

चांदनी रातों में प्रकृति के नज़ारे खूबसूरत दिखाई देते हैं। नदी, तालाब, झील आदि में चंद्रमा का प्रतिबिम्ब बड़ा मनोरम दिखाई देता है। पहाड़ों पर बिखरी चांदनी पहाड़ों के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। रात्रि में खिलने वाले फूलों पर जब चांदनी की किरणें पड़ती हैं तो फूलों की छटा सचमुच मन मोह लेती है। शरद पूर्णिमा की चांदनी तो धरती पर एक तरह से अमृत बरसाती है। इस रात्रि में चंद्र किरणों में भ्रमण करने से शरीर के कई रोगों से छुटकारा मिलता है। त्वचा का सौन्दर्य निखरने लगता है।

घटता-बढ़ता चंद्रमा लोक जीवन के कई रंगों में रंगा है। कार्तिक अमावस्या को यानी बिन चांद के रात्रि को हिन्दू दीप पर्व मनाते हैं।

और हाँ, दादी मां और नानी मां की कहानियों में चाँद को 'बच्चों का चंदा मामा' भी कहा गया है। सूरज की तरह चाँद भी कुदरत का अनमोल तोहफा है।

पढ़ो और हँसो

एक व्यक्ति चित्र प्रदर्शनी देख रहा था अचानक एक जगह रूककर उसने कहा– छि: क्या आप इसे 'माडर्न आर्ट' कहते हैं।

संचालक ने कहा– नहीं श्रीमान् इसे हम आईना कहते हैं।

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से बोला– अगर तुम बता दो कि मेरी टोकरी में क्या है तो सारे के सारे अंडे तुम्हारे और अगर तुम यह बता दो कि ये गिनती में कितने हैं तो साठ के साठ तुम्हारे। अगर तुमने यह भी बता दिया कि अंडे किसके हैं तो वह मुर्गी भी तुम्हारी?

दूसरा व्यक्ति : यार कोई इशारा तो दो, बड़ा कठिन सवाल है।

एक महिला पालतू पशुओं के विक्रेता से बोली– मुझे यह कुत्ता तो पसन्द है लेकिन इसकी टांगें बहुत छोटी-छोटी हैं।

विक्रेता बोला– छोटी कहाँ हैं? चारों टांगे जमीन तक तो पहुँच रही हैं।

मोहन अपनी पत्नी के साथ होटल में गया। वहाँ जाकर उसने दो कप गर्म कॉफी मंगाई। कॉफी आने के साथ ही मोहन तुरन्त कॉफी पीने लगा। यह देख उसकी पत्नी बोली– शान्ति से कॉफी पिओ न। इतनी जल्दी क्या है?

मोहन बोला : 'मीनू कार्ड' पढ़ा नहीं? गर्म कॉफी का चार रुपया और कोल्ड कॉफी का आठ रुपया है। कॉफी ठंडी हो गई तो?

एक व्यक्ति मिठाई की दुकान पर गया। उस व्यक्ति ने पूछा– यह क्या है?

दुकानदार ने जवाब दिया– खाजा।

उस व्यक्ति ने उसे खा लिया। जब वह जाने लगा तो दुकानदार ने उससे पैसे मांगे तो उस व्यक्ति ने अपना स्पष्टीकरण इस तरह दिया– तुमने ही तो कहा था खा जा। अब पैसे किस बात के?

पुलकित : तुम्हारी कार कैसी चल रही है?

उज्ज्वल : बहुत खूब, बस हॉर्न को छोड़कर सब कुछ बजता है।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

वकील : (चोर से) अच्छा तो तुमने पुलिस को बताया कि यह अंगूठी तुम्हें दौड़ने के मुकाबले में मिली है।

चोर : जी हाँ।

वकील : उस दौड़ में तुम्हारे साथ और कौन-कौन दौड़े थे?

चोर : जी, गली के कुछ आदमी, दो पुलिसवाले और स्वयं अंगूठी का मालिक।

राहुल : (भगवान से) हे भगवान पटना को भारत की राजधानी बना दो नहीं तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा।

पास ही खड़े एक व्यक्ति ने यह सुना तो पूछा– पटना को भारत की राजधानी न बनने से तुम बर्बाद कैसे हो जाओगे?

राहुल : बात यह है कि मैंने परीक्षा में भारत की राजधानी पटना लिख दी।

चिंटू : अरे यार, तुम हर एसएमएस को दो बार क्यों भेजते हो?

मिंटू : ताकि अगर तुझे एक फॉरवर्ड करना पड़े तो दूसरा तेरे पास रहे।

– सुशान्त सागर (मोतीहारी)

टोनी : (दवाईवाले से) मुझे चूहे मारने की दवा दो। दवाईवाले ने उसे दवा दे दी। थोड़ी देर बाद टोनी कुछ सोचते हुए बोला– अच्छा ये तो बताइए चूहे जो मरेंगे उसका पाप किसके सिर पर लगेगा?

दवाईवाला : निश्चिन्त रहिए किसी के सिर नहीं लगेगा क्योंकि इससे चूहे मरेंगे ही नहीं।

सिपाही : (चोर से) 'नौ दो ग्यारह' का मतलब क्या होता है?

चोर : सर! पहले हथकड़ी तो खोलिये तभी तो मैं बताऊँगा 'नौ दो ग्यारह' का मतलब क्या होता है।

एक बच्चे की कलाई पर घड़ी देखकर एक व्यक्ति ने पूछा– क्या यह घड़ी समय बताती है?

बच्चे ने मासूमियत से जवाब दिया– जी नहीं अंकल, मुझे देखकर पता लगाना पड़ता है।

– आर्यन (दिल्ली)

प्रस्तुति : हरमन अरोड़ा

दृढ़ इच्छा शक्ति की विजय

जापान के छोटे से कस्बे में रहने वाले दस वर्षीय ओकायो को जूडो सीखने का बहुत शौक था, पर बचपन में हुई एक दुर्घटना में बायां हाथ कट जाने के कारण उसके माता-पिता उसे जूडो सीखने की आज्ञा नहीं देते थे। अब वो बड़ा हो रहा था और उसकी जिद्द भी बढ़ती जा रही थी। अंततः माता-पिता को झुकना ही पड़ा और वे ओकायो को नजदीकी शहर के एक मशहूर मार्शल आर्ट्स गुरु के यहाँ दाखिला दिलाने ले गए। गुरु ने जब ओकायो को देखा तो उन्हें अचरज हुआ कि बिना बाएं हाथ का यह लड़का भला जूडो क्यों सीखना चाहता है? उन्होंने पूछा, ''तुम्हारा तो बायां हाथ ही नहीं है तो भला तुम और लड़कों का मुकाबला कैसे करोगे?

''ये बताना तो आपका काम है।'' ओकायो ने आगे कहा, ''मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मुझे सभी को हराना है और एक दिन खुद ''सेंसई (मास्टर) बनना है।''

गुरु उसकी सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति से काफी प्रभावित हुए और बोले, ''ठीक है मैं तुम्हें सिखाऊँगा, लेकिन एक शर्त है, तुम मेरे हर निर्देश का पालन करोगे और दृढ़ विश्वास रखोगे।''

ओकायो ने सहमति में गुरु के समक्ष अपना सिर झुका दिया।

गुरु ने एक साथ लगभग पचास छात्रों को जूडो सिखाना आरम्भ किया। ओकायो भी अन्य लड़कों की तरह सीख रहा था पर कुछ दिनों बाद उसने ध्यान दिया कि गुरु जी अन्य लड़कों को अलग-अलग दांव-पेंच सिखा रहे हैं लेकिन वह अभी भी उसी एक किक का अभ्यास कर रहा है जो उसने शुरू में सीखी थी। उससे रहा नहीं गया और उसने गुरु से पूछा– ''गुरु जी आप अन्य लड़कों को नयी-नयी चीजे सीखा रहे हैं पर मैं अभी भी बस वही एक किक मारने का अभ्यास कर रहा हूँ, क्या मुझे और चीजें नहीं सीखनी चाहिए?''

गुरु जी बोले, ''तुम्हें बस इसी एक किक पर महारत हासिल करने की आवश्यकता है।'' और वे आगे बढ़ गए। ओकायो को विस्मय हुआ पर उसे अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास था और वह फिर अभ्यास में जुट गया।

समय बीतता गया और देखते-देखते दो साल गुजर गए पर ओकायो उसी एक किक का अभ्यास कर रहा था। एक बार फिर ओकायो को चिंता होने लगी और उसने गुरु से कहा– ''क्या अभी भी मैं बस यही करता रहूँगा और बाकी सभी नई तकनीकों में पारंगत होते रहेंगे।''

गुरु जी बोले, ''तुम्हें मुझमें यकीन है तो अभ्यास जारी रखो।''

ओकायो ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए बिना कोई प्रश्न पूछे अगले 6 साल तक उसी एक किक का अभ्यास जारी रखा।

सभी को जूडो सीखते आठ साल हो चुके थे। एक दिन गुरु जी ने सभी शिष्यों को बुलाया और बोले, ''मुझे आपको जो ज्ञान देना था वो मैं दे चुका हूँ और अब गुरुकुल की परंपरा के अनुसार सबसे अच्छे शिष्य का चुनाव एक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया जायेगा और इसमें विजयी होने वाले शिष्य को ''सेंसेई'' की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।''

प्रतिस्पर्धा आरम्भ हुई। ओकायो ने लड़ना शुरू किया और खुद को आश्चर्यचकित करते हुए उसने अपने पहले दो मैच बड़ी आसानी से जीत लिये। तीसरा मैच थोड़ा कठिन था, लेकिन कुछ संघर्ष के बाद विरोधी ने कुछ क्षणों के लिए अपना ध्यान उस पर से हटा दिया। ओकायो को तो मानो इसी मौके का इंतजार था, उसने अपनी अचूक किक विरोधी के ऊपर जमा दी और मैच अपने नाम कर लिया।

अभी भी अपनी सफलता के आश्चर्य में पड़े ओकयो ने फाइनल में अपनी जगह बना ली।

इस बार विरोधी कहीं अधिक ताकतवर, अनुभवी और विशाल था। देखकर ऐसा लगता था कि ओकायो उसके सामने एक मिनट भी टिक नहीं पायेगा।

मैच शुरू हुआ। विरोधी ओकायो पर भारी पड़ रहा था। रेफरी ने मैच रोक कर विरोधी को विजेता घोषित करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन तभी गुरु जी ने उसे रोकते हुए कहा, ''नहीं, मैच पूरा चलेगा।'' मैच फिर से शुरू हुआ।

विरोधी अति आत्मविश्वास से भरा हुआ था और अब ओकायो को कम आंक रहा था, और इसी दंभ में उसने एक भारी गलती कर दी। उसने अपना गार्ड छोड़ दिया। ओकायो ने इसका फायदा उठाते हुए आठ साल तक जिस किक की प्रैक्टिस की थी उसे पूरी ताकत और सटीकता के साथ विरोधी के ऊपर जड़ दी और उसे ज़मीन पर धराशाई कर दिया। उस किक में इतनी शक्ति थी कि विरोधी वहीं मूर्छित हो गया और ओकायो को विजेता घोषित कर दिया गया।

मैच जीतने के बाद ओकायो ने गुरु से पूछा, ''सेंसेई, भला मैंने यह प्रतियोगिता सिर्फ एक 'मूव' (दांव) सीखकर कैसे जीत ली?''

''तुम दो वजहों से जीते,''गुरुजी ने उत्तर दिया– ''पहला, तुमने जूडो की एक सबसे कठिन किक पर अपनी इतनी मास्टरी कर ली कि शायद इस दुनिया में कोई और यह किक इतनी दक्षता से मार पाए, और दूसरा कि इस किक से बचने का एक ही उपाय है, और वह है विरोधी के बाएं हाथ को पकड़कर उसे ज़मीन पर गिराना।'' ओकायो समझ चुका था कि आज उसकी सबसे बड़ी कमजोरी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी थी।

मित्रों! मानव होने का मतलब ही है अपूर्ण होना, अपूर्णता अपने आप में बुरी नहीं होती, बुरा होता है हमारा उससे व्यवहार करने का तरीका। अगर ओकायो चाहता तो अपने बाएं हाथ के ना होने का रोना रोकर एक अपाहिज की तरह जीवन बिता सकता था लेकिन उसने इस वजह से कभी खुद को हीन महसूस नहीं होने दिया। उसमें अपने सपने को साकार करने की दृढ़ इच्छा थी और यकीन जानिए जिसके अन्दर यह इच्छा होती है, भगवान उसकी मदद के लिए कोई न कोई गुरु भेज देता है। ऐसा गुरु जो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी को ही उसकी बड़ी ताकत बना उसके सपने साकार कर सकता है।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

करने योग्य चार बातें

व्यायाम : भारतीय मनिषियों ने अपने अनुभव के आधार पर स्वीकार किया है कि बच्चों को नित्य व्यायाम करना चाहिए। जिससे उनके शरीर के अंग-प्रत्यंग दृढ़ हो जाएं। उनको सामूहिक खेल-कूद में भाग लेना चाहिए। जिससे वे अपने दल के साथ देश के हित के लिए सामूहिक काम करें।

विद्याध्ययन : दूसरा काम है विद्याध्ययन। अपने विषय विशेष में जहाँ से भी हो, जिस किसी से भी हो, ज्ञान लाभ करना चाहिए। जिस सुलभता से युवावस्था में ज्ञान मस्तिष्क में प्रवेश करता है उतना आगे चलकर सम्भव नहीं हो पाता।

समाज-सेवा : तीसरा काम है स्वयं को समाज-सेवा के योग्य बनाना। मनुष्य को समाज में रहना है; सबके साथ रहना है; सबके सुख-दु:ख में भाग लेना है; भूमि से अन्न उत्पन्न करना है, गुरुजनों की सेवा करनी है। इन सबकी योग्यता अध्ययनावस्था में ही प्राप्त हो सकती है।

आत्म-कल्याण : मनुष्य में अन्य प्राणियों से एक अलग विशेषता यह है कि वह अपनी आत्मा का ज्ञान अथवा आत्म-बोध कर आत्म-कल्याण कर सकता है। आत्म-कल्याण प्रभु-परमात्मा की जानकारी (ब्रह्मज्ञान) द्वारा ही सम्भव है।

ईश्वर की उपासना से चित् को शान्ति मिलती है। नीच प्रवृत्ति से मनुष्य बचता है। सन्मार्ग की ओर आकृष्ट होता है। इन चार बातों का अगर बच्चे ध्यान रखे तो उनका अपना व विश्व का कल्याण सम्भव है।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया रंग भरकर चित्र डाक से ही भेजें। (ई-मेल) से नहीं।

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से रंग भरो प्रतियोगिता कुछ समय के लिए प्रकाशित करने में असमर्थ थे। पाठकों के अनुरोध पर रंग भरो प्रतियोगिता पुन: प्रारम्भ की जा रही है। पाठकों से अनुरोध है कि सामने दिये गये चित्र में रंग भरकर भेजें।

– सम्पादक

पहेलियों के उत्तर :

1. भुट्ठा, 2. ईंट, 3. चक्की, 4. चन्द्रमा, 5. पत्र, 6. परीक्षा, 7. काजल, 8. बारिश, 9. हवाईजहाज, 10. तिरंगा झंडा, 11. इन्द्रधनुष, 12. अनन्नास, 13. नमक।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री.....

पूरा पता : .....

.....पिन कोड.....

हम हँसती दुनिया के पुराने पाठक हैं। हम इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करते हैं। यह पत्रिका जीवन के लिए उपयोगी, व्यवहारिक ज्ञान व शिक्षा प्रदान करती है। इस पत्रिका को जन्मदिन के उपहार के रूप में देकर इसका प्रचार-प्रसार बढ़ाया जा सकता है। परमात्मा से हमारी यही कामना है कि यह पत्रिका सदैव उन्नति की ओर अग्रसर रहे।

– स्वीटी हशमतराय (इन्दौर)

मुझे व मेरे छोटे भैया को हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। हम इसके नियमित पाठक हैं। हम इसके सारे पुराने अंक संभाल कर रखते हैं।

पत्रिका आते ही मेरा भैया कभी-कभी मुझसे झपट कर पत्रिका छीन कर ले जाता है ताकि वह इसे मेरे से पहले पढ़े।

– मुस्कान (रामपुराफूल)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। मैं हर महीने पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ क्योंकि हँसती दुनिया ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है।

– पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

हँसती दुनिया को मैं और मेरे परिवार के सभी लोग इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका हँसती दुनिया पूरी दुनिया में अपने आप में अकेली पत्रिका है। हर माह की शुरुआत में ही हमें यह पत्रिका मिल जाती है।

– मनोज कुमार (दिल्ली)

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication	:	Sant Nirankari Satsang Bhawan, Sant Nirankari Colony, Delhi-110009
2. Periodicity of Publication	:	Monthly
3. Printer's Name (whether citizen of India)	:	C. L. Gulati Yes, Indian
Address	:	Sant Nirankari Satsang Bhawan Sant Nirankari Colony Delhi-110009
4. Publisher's Name (whether citizen of India)	:	C. L. Gulati Yes, Indian
Address	:	Sant Nirankari Satsang Bhawan Sant Nirankari Colony Delhi-110009
5. Editor's Name (whether citizen of India)	:	Vimlesh Ahuja Yes, Indian
Address	:	H.No. 1/43, Sant Nirankari Colony, Delhi - 110009
6. Name and Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.	:	Sant Nirankari Mandal, Sant Nirankari Colony, Delhi - 110009

I, C. L. Gulati, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1-03-2021

C. L. Gulati
Publisher

बच्चों के अपनाने योग्य बातें

- अच्छे नागरिक बनना।
- व्यवहारिक जीवन में सुधार लाना।
- हर एक के दु:ख-दर्द में काम आना।
- माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा करना।
- माता-पिता की कमाई के मुताबिक खर्च करना।

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode on 10th of every month
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 20th of every month
Voice DIVINE
Voice Divine
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
License No. U (DN) - 23/2021-2023
Licensed to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओंः सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org
और patrika@nirankari.org तथा

WhatsApp Mobile No. 9266629841
पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेलः sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21st & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)